षड् द्रव्य विचार.

राग द्वेष विजेतारम् ज्ञातारं विश्ववस्तुनः
शक्रपूज्यं गिरामीशं तीर्थेशंस्मृति मानये १

योजक,

मुनि बुद्धिसागरजी.

छपावी प्रसिद्ध करनार,

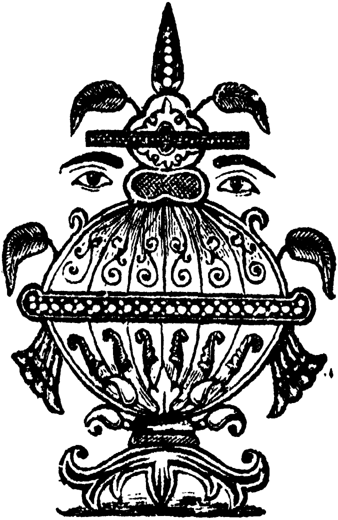
वकील मोहनलाल हीमचंदभाई.

मु० पादरा.

सने १९०३

अमदावाद.

श्री जैन प्रिन्टिंग प्रेसमां शाह जेठालाल
दलसुखभाइए छापी



उद्देश.

श्री तीर्थंकर महाराजाए समवसरणमां बेसी भव्यजीवोना हित भणी षड्द्रव्यनुं स्वरूप कथन कर्युं. ते षड्द्रव्य स्वरूप एवुं छे के—ते जाणीने तेनी श्रद्धा करवाथी सम्यकत्वनी प्राप्ति थाय छे. जीवादि नव तत्वनो समावेश पण षड्द्रव्यमां थइ शके छे ए षड्द्रव्यनुं विशेष स्वरूप सूत्रोमां छे. तेमांथी यत्किंचित् आ ग्रंथमां लखवामां आव्युं छे.

श्री तीर्थंकर महाराजाए १ द्रव्यानुयोग २ गणितानुयोग ३ चरणकरणानुयोग अने ४ कथानुयोग ए चार अनुयोग कथन कर्या छे. तेमां द्रव्यानुयोग विशेषे करी आत्माने हितकारक छे. जेम जेम द्रव्यानुयोगनुं विशेष विशेष स्वरूप जाणवामां आवे छे तेम तेम सम्यक्त्वनी शुद्धि थाय छे. षड्द्रव्यनो

द्रव्यानुयोगमां समावेश थाय छे. अने तेनुं स्वरूप वीतराग वचनानुसारे जाणवाथी अने तेनी श्रद्धा करवाथी आसन्न मोक्ष प्राप्त थाय छे. अने अन्य मत वादीओनां तत्व असत्य भासे छे. माटे तेनुं जाणपणुं करवानी आवश्यक्ता छे. आ ग्रंथ लखवानुं—

मुख्य प्रयोजन.

ए छे जे हुं सुरतथी विहार करी पादरा गामे आव्यो त्यांना श्रावक वकील मोहनलाल हीमचंदनो समागम थयो. तेओए मने कह्युं के षड्द्रव्यनुं कांइक स्वरूप समजावो, त्यारे तेमनी वीनंतिथी तेमना सारुं केटलाक ग्रंथोमांथी उद्धार करी ग्रंथोना अनुसारे आ षड्द्रव्य विचार प्रबंध लखी तेमने समजाव्यो, तेथी तेमने घणो हर्ष थयो. अने जैन तत्वो उपरनी श्रद्धा दृढ थइ. तेमने पोताने आ ग्रंथथी घणो लाभ

थयो. तेम बीजा भव्य जीवोने थाय, एम जाणी आ ग्रंथ छपाववा तेओए अनुमति मागी ते योग्य लागवाथी आपी छे.

क्षमापना.

आ ग्रंथमां कोइ ठेकाणे मति दोषथी भूल थइ होय तो ते माटे पंडित पुरुषोए मारा उपर क्षमा करी सुधारवी " शुभे यथाशक्ति यतनीयं " ए न्यायेने अनुसरी में आ प्रयास कर्यो छे, तेमां कांइ वीतराग वचनथी विरुद्ध लखायु होय ते संबंधी मिच्छामि दुकडं दउं छुं.

भलामण.

आ ग्रंथनो विषय गहन होवाथी गीतार्थ समक्ष समजीने वांचवाथी हितकर थशे माटे ते प्रमाणे वर्ती आ ग्रंथनो लाभ लेवामां आवशे तो करेलो प्रयत्न सफल थयो गणाशे.

आशीर्वाद

भव्य जीवो आ ग्रंथ वांची व्यवहार अने निश्चय पूर्वक आत्म साधन करी परमात्म पद (मुक्तिपद) पामो एवी मारी आकांक्षा छे.

तथास्तु.

मु. काबीठा, माहा सुद १ सं. १९५९.

ली०

मुनि बुद्धिसागर.

षट् द्रव्य विचार.

नमो अरिहंताणं नमो सिद्धाणं नमो आयरियाणं नमो उवज्झायाणं नमो लोए सव्व साहूणं एसो पंचनमुक्कारो सव्व पावप्पणासणो मंगलाणं सव्वेसिं पढमं हवइ मंगलम्

ब्राह्मी भगवति भारती, प्रणमी तेहना पाय
जीनवाणीना चार भेद, अनुयोगे करी थाय १
गणित चरण करण कथा द्रव्य ए चार उदार
द्रव्य ए चारमां सारछे, धरतां भवजल पार २
अति गहन द्रव्यानुयोग, उदधि सम कहे जीन

तेनो लेश हुं वर्णवुं, अति उत्कंठीत दीन ३
भाग्य दशा जो आकरी, सद् गुरु करुणा होय
निर्मळ बुद्धयादिकथी, समजे विरलो कोय ४
योग्य जीवने एहनो, लागे मनमां राग
संमतिग्रंथे भाखीयुं, ते साधु महा भाग ५
उदासीनता संपजे, धरतां एहनुं ध्यान
निर्मळ थावे आतमा, पामे केवळज्ञान ६
द्रव्य तणा षड् भेद छे, धर्मा धर्म विचार
आकाश पुद्गल कालने, आतम ए मनोहार ७
पंच धुरंते हेय छे, आतम उपादेय
गुण पर्याय छे तेहना, भविजन ने हे ज्ञेय ८
पूर्व प्रणीत ग्रंथो दधि, सम्मत्यादिक सार
तेहनो लेश लही करी, वचन वदुं धरी प्यार ९
पंडीतजन सुदृष्टिथी, देखे जो आ ग्रंथ

सार विचारी धारीने, पामे शिवपुर पंथ १०
दुष्ट दोष देखी करी, मनमां माने हर्ष
पंडीत जन करे पारखुं, माने ते उत्कर्ष ११

आ चतुर्गति रुप संसार आत्मा अनादि काळथी परिभ्रमण करे छे, अने कर्मना योगे जन्म जरा मरणादि रुप दुःख भोगवे छे, कर्मना संयोगथी एकेंद्री बेरेंद्री तेरेंद्री चोरेंद्री पंचेंद्रीपणुं पामे छे, दश द्रष्टांते करी दुर्लभ मनुष्य जन्म पामीने पण श्रावककुल सद्गुरु समागम जीनवाणीनुं श्रवण तेनी सद्दहणा अने ते प्रमाणे वर्तवुं ए आदि उत्तरोत्तर दुर्लभ छे.

जीहां सुधी आत्मानु शुद्ध स्वरुप ओळखातुं नथी तीहां सुधी शुद्ध सद्दहणा थती नथी

श्री जीनेश्वर कथीत वाणी सांभळवाथी आत्मानुं स्वरुप यथातथ्य समजाय छे, माटे ज्ञाननो घणो खप करवो. ज्ञान विना जीव अजीव आदि पदार्थनु सम्यक् ज्ञान थतुं नथी. आत्मा नित्य केवी रीतेछे अनित्य केवी रीतेछे उत्पाद व्यय अने ध्रुव शी वस्तु छे तेनुं जीहां सुधी ज्ञान नथी, तीहां सुधी जीव सम्यक् वस्तु जाणी शकतो नथी अने हेय ज्ञेय अने उपादेय पण जाणी शकतो नथी. सम्यक् वस्तुना ज्ञान थकी सम्यक्त्व प्राप्त थाय छे. माटे ज्ञाननी आवश्यकता छे.

ज्ञानना पण बे भेद छे १ व्यवहारज्ञान २ निश्चयज्ञान

व्यवहारज्ञान—एटले अलंकार व्याकरण अन्य मतियोना ग्रंथ तथा गणितानुंयोग कथानुयोग चरणकरणानुयोग तुं जाणपणु ए सर्व व्यवहार ज्ञान छे तथा उपयोग बिना सूत्र सिद्धांतना अर्थ करवा ए पण व्यवहार ज्ञान छे हठ समाधि ते पण व्यवहार ज्ञानछे, एनाथी मुक्ति मळती नथी पण आत्माना स्वरुपनुं सम्यक् जाणवुं, षड् द्रव्यना गुण पर्यायनु जाणवुं, उत्पाद व्यय अने ध्रुवनुं जाणवुं. ते थकी निश्चय ज्ञान थाय छे. पांच द्रव्य त्याग करवा योग्य छे, एमां आत्मानी वस्तु कंइ नथी, ए पांचमां पण पुद्गल द्रव्यना संयोग संबंधे करी आ आत्मा परवर पोतानी मानी बेठो छे, पण वस्तुतः ते

पोतानी नथी. ज्ञान वस्तु आत्मानी छे. अनंतज्ञान अनंत दर्शन अनंत चारीत्र अनंत वीर्यनो भोक्ता आ आत्मा अरुपी असंख्य प्रदेश मयी छे. तेनुं जे ध्यान तेने निश्चय ज्ञान कहे छे.

आत्मा वस्तु अनादि अनंत छे, तेने कर्मनो संयोग थयो छे, तेथी दुःखी थाय छे, भवी साथे कर्मनो संबंध अनादि सांत भांगे छे. अभवी साथे कर्मनो संबंध अनादि अनंतमे भांगे छे.

कर्मना आठ प्रकार छे—ज्ञानावरणी दर्शनावरणी, वेदनी, मोहनी, आयुष्य नाम, गोत्र, अने अंतराय एम आठ कर्म छे, तेनी उतर प्रकृति १५८ छे. ते कर्मरुप जड वस्तु-

नो प्रपंच विचित्र छे जेम ब्राह्मीरुप जड औ-षधिना भक्षण थकी बुद्धिरुप वस्तुनु स्फुरा-यमान पणु थाय छे, तेम कर्म वस्तु जे जड-रुपे छे, तेना संबंध थकी आत्मा विचित्र आकारे देखाय छे. अने जुदा जुदा प्रकार-नां शरीरने धारण करे छे, तेम पांचइंद्री म-न वचन अने कायरुप पुद्गल वस्तुने धार-ण करे छे, ए सर्व कर्मना प्रपंच छे, ए कर्म पुद्गलास्तिकाय छे. जड छे. सक्रिय छे, तेमां आत्मत्वपणु नथी, एम ज्यारे ज्ञान थाय छे त्यारे तेनाथी मोह उतरे छे, ते माटे षट् द्रव्यनुं ज्ञान थवाथी समकितनी प्राप्ति थाय छे ते षट् द्रव्य देखाडे छे.

(१) धर्मास्तिकाय (२) अधर्मास्तिकाय

(३) आकाशास्तिकाय (४) पुद्गलास्तिकाय (५) काळ (६) जीवास्तिकाय—ए छ द्रव्य शास्वतां छे.

ए छ द्रव्यना अनुक्रमे गुण कहेछे.

१ धर्मास्तिकायना गुण ४ (१) अरूपी (२) अचेतन (३) अक्रिय (४) गतिसहाय

२ अधर्मास्तिकायना गुण ४ (१) अरुपी (२) अचेतन (३) अक्रिय (४) स्थितिसहाय

३ आकाशास्तिकायना गुण ४ (१) अरूपी (२) अचेतन (३) अक्रिय (४) अवगाहनादान

४ पुद्गलास्तिकायना गुण४(१)अरूपी (२) अचेतन (३) सक्रिय (४) मिलण विखरणरुप पुरणगलन

५ काळद्रव्यना गुण ४ (१) अरूपी (२) अचेतन (३) अक्रिय (४) नवापुराण वर्तना लक्षण

६ जीवद्रव्यना गुण ४ (१) अनंतज्ञान (२) अनंतदर्शन (३) अनंतचारित्र (४) अनंतवीर्य ए छ द्रव्यना गुण कह्या ते नित्य ध्रुव रुपे छे

छ द्रव्यना अनुक्रमे चार चार पर्याय कहेछे.

१ धर्मास्तिकायना (१)खंध (२) देश (३) प्रदेश (४) अगुरु लघु

२ अधर्मास्तिकायना (१) खंध (२) देश (३) प्रदेश (४) अगुरु लघु

३ आकाशास्तिकायना(१) खंध (२) देश (३) प्रदेश (४) अगुरु लघु

४ पुद्गल द्रव्यना (१) वर्ण (२) गंध
(३) रस (४) स्पर्श

५ काळद्रव्यना (१) अतीत (२) अनागत
(३) वर्तमान (४) अगुरु लघु

६ जीवद्रव्यना (१) अव्याबाध (२) अनवगाह
(३) अमुतिक (४) अगुरु लघु

ए छ द्रव्यना छ पर्याय कह्या.

हवे ए छ द्रव्यना गुण पर्यायनुं साधर्म्य कहे छे,

अगुरु लघु पर्याय छए द्रव्यमां सरखो छे, अरुपी गुणे करी पांच द्रव्यनु साधर्म्य छे एक पुद्गल द्रव्यमां अरुपी गुण नथी, कारण के पुद्गल द्रव्यरुपी छे. तथा अचेतन गुणे करी धर्मास्तिकाय अधर्मास्तिकाय आ-

काश पुद्गल अने काल ए पांच द्रव्यनु साधर्मिपणु छे. जीवद्रव्यमां अचेतन गुण नथी, 'चेतनालक्षणोजीव इति वचनात्' सक्रियगुणे करी जीव तथा पुद्गल ए बे द्रव्यनुं व्यवहारथी साधर्म्य छे. कर्म थकी रहीत सिद्ध जीवोमां सक्रिय गुण नथी, बाकीना चार द्रव्यमां सक्रिय गुण नथी; गती सहाय गुण एक धर्मास्तिकायमां छे. बाकीना पांच द्रव्यमां नथी, स्थिति सहाय गुण एक अधर्मास्तिकायनो छे. बीजा पांच द्रव्यमां नथी. तथा अबगाहना गुण ते एक आकाशास्तिकाय द्रव्यमां छे, बाकीना पांच द्रव्यमां नथी. वर्तना गुण एक काळ द्रव्यमां छे बीजा पांच द्रव्यमां नथी. मिलण विखरण गुण पु-

द्गल द्रव्यमां छे बाकीना पांच द्रव्यमां नथी, तथा ज्ञानचेतना गुण ते एक जीवद्रव्यमां छे. बाकीना पांच द्रव्यमां नथी. ए मुल गुण कोइ द्रव्यना कोइ द्रव्यमां मळता नथी.

एक धर्मास्तिकाय बीजो अधर्मास्तिकाय त्रीजो आकाश, ए त्रण द्रव्यना त्रण गुण तथा चार पर्याय सरखा छे, अने अरुपी अचेतन अक्रीय ए त्रण गुणे करी काल द्रव्य पण ए समान छे.

हवे ए छ द्रव्यना गुण पर्याय स्वरुप जाणवाने सूत्रपाठ गाथा कहे छे.

१ २ ३ ४ ५ ६
परिणामि जीव मुत्ता सपएसा एग खित
७ ८ ९ १० ११
किरिआय॥ निश्चेणिच्च कारण कत्ता सव्वगय
१२
इयर अप्पवेसे ॥ १ ॥

अर्थ. निश्चय नयेकरी छए द्रव्य परीणामी छे कारण के धर्मास्तिकाय पोतानामां निश्चय नये करी परिणमी रहुं छे, पण बीजा पांच द्रव्यमां परिणमतु नथी. बीजु अधर्मास्तिकाय द्रव्य पण निश्चय नये करी पोताना स्वरुपमां परीणमी रहुं छे, पण बीजा पांच द्रव्यमां पारणमतु नथी. आकाशास्तिकाय पण निश्चय नये करी पोताना स्वरुपमांज परिणमे छे. काल द्रव्य पण निश्चय नये करी पोताना स्वरुपमां परिणमी रहुं छे, पण बीजा पांच द्रव्यमां निश्चय नये करी परिणमतुं नथी. जो निश्चय नये करी पर पुद्गल[1] द्रव्यमां परिणमेतो[2] जीव कोइकाले कर्म थकी रहीत थइ सिद्धि पद पामे

नही, अने व्यवहार नये करी जीवनाटंकी-
याना पेठे एकेंद्री बेरेंद्री तेरेंद्री चौरेंद्री देवता
मनुष्य तीर्यंच नारकी समुर्छिम पंचेंद्रीरुप
नवा नवा पुद्गलना वेष पेहेरी नवा नवा
रुपी नवा नवा नाम धरावी आत्म भान मू-
ल्यो छतो चार गतिरुप संसार नगरना चो-
राशीलाख चउटामां अनादिकाळथी अनेक
दुःख सहन करतो भमतो फरे छे. ए रीते
आ जीव कर्मरुप पुद्गलमां परिणम्यो छतो
भटक्या करे छे. परंतु निश्चय नये करी जीव
सदा शाश्वतो छे, अने सत्ताए सिद्ध समान
छे. व्यवहार नये करी जीव अने पुद्गल-
ए बे द्रव्य परिणामी छे तथा पुद्गला स्ति-
काय द्रव्यना पण निश्चय नये करी पर-

माणु आ सर्व पोताने स्वभावे रह्यो छे, अने व्यवहार नये करी पुद्गल परमाणु आ मली खंध थाय छे, पण जो निश्चय नये करी खंधातो होततो कोइकाले ए खंध विखराइ जात नही सदा कालखंध भावेज रहेत, परंत तेमतो रहेता नथी, माटे व्यवहार नये करी पुद्गलना परमाणुआ मळी खंध थाय छे, अने पाछा खंध विखराइ पण जाय छे, निश्चय नये करी परमाणुआ पोतपोताने स्वभावे सदा शाश्वता छे,पण कोइकाले वधशे घटशे नही.बाळ्या बळशे नही.गाळ्या गळशे नही. ए रीते ए छ द्रव्य निश्चय नये करी तपोताने स्वभावे परिणामिक जाणवां. तथा व्यवहार नये करी धर्म अधर्म आकाश अने

काल ए चार द्रव्य अपरिणामी छे. अने जीव तथा पुद्‌गल ए बे द्रव्य परिणामी छे. केमके व्यवहार नयने मते जीव समये समये अनंतां कर्मरुप वर्गणानां दळीयां लीए छे, अने समये समये अनंतां कर्मरुप वर्गणानां दळीआं खेरवे छे, पण जो निश्चय नये करी कर्मनुं ग्रहण जीव करतो होयतो कोइकाले कर्मथकी रहीत थाय नही. आत्माजेतेराग अने द्वेषे करी परद्रव्यमां परिणमे छे, रागद्वेष रुप अज्ञानती अशुद्धताए करी पुद्‌गल परमाणुआने ग्रहण करे छे, अने मनुष्य देवता नारकी अने तीर्यंचना शरीर रुप खंध प्रते नीपजावे छे. ते खंध स्थिति प्रमाणे रहे छे, वळी पाछा खेरवे छे. वळी बीजा परमाणु-

आओने ग्रहण करी नवा शरीर रुप खंधने नीपजावे छे, केटलाएक पुद्गल परमाणुआ-वळी ग्रहण करी पाछा खेरवे छे, एम व्यव-हार नये करी अनादि काळथी जीवपुद्गलने परिणमनपणानी घटमाल समये समये चाली रही छे. शुभ पुद्गलनो संबंध थवाथी जीव सुख माने छे, अने अशुभ पुद्गलनो संबंध थवाथी जीव दुःख माने छे, ते पुण्य पापरुपे जाणवुं पण ए स्ववस्तु नथी ए रीते व्यवहार नयथी जीव अने पुद्गल ए बे द्रव्य परि-णामी छे.

हवे छ द्रव्यमां जीव द्रव्य केटला अने अजीव द्रव्य केटला ते बतावे छे, नाणंचदंस-पंचेव चरित्तच तवोतहा, वीरियंउवओगोअ

एअंजीअस्सलखणं. ॥ १ ॥

अर्थ—ज्ञान, दर्शन, चारित्र. तप वीर्य अने उपयोग जनामां होय तेने जीव कहे छे. अने बाकीनाने अजीव केहे छे. धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय, पुद्‌गलास्तिकाय, अने काल, ए पांच द्रव्य अजीव छे, कारण के ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप. वीर्य अने उपयोगरुप जीवनुं लक्षण तेमनामां नथी, जीव द्रव्य ते जीव छे. 'चेतनालक्षणोजीवः इतिवचनात्'

छए द्रव्यमां पुद्‌गल द्रव्य मूर्तिमंत छें. अने शेष पांच द्रव्य अ मूर्ति छे. धर्म, अधर्म, आकाश, अने काल, ए चार द्रव्य ते तो अ-मूर्ति छे. जीवद्रव्यना बे भेद छे. सिद्ध अने

संसारी, तेमां सिद्धना जीव अमूर्तिमंत छे. अने संसारी जीवो कर्मोपाधिथी मूर्तिमंत छे. निश्चय नये करी तो जीव अरुपी माटे अमूर्ति कहीए, अने व्यवहार नये करी देवता मनुष्य तीर्यंच अने नारकी रुप जीवना पांचसे त्रेसठ (५६३) भेद थाय छे, ते सर्वे मूर्तिरुपे जाणवा. पुद्गल द्रव्यनो व्यवहार नयने मते अनंता परमाणुआ मळी स्वंध बने छे, त्तेवारे नजरे दीठामां आवे छे, माटे एने मूर्त केहवाय छे. छ द्रव्यना स्वरुपमां मूर्त अमूर्तनो विचार कह्यो.

हवे सप्रदेशी अने अप्रदेशीना वीचार कहे छे,

छ द्रव्यमां पांच द्रव्य सप्रदेशी छे, अने

एक कालद्रव्य अप्रदेशी छे, धर्मास्ति असंख्यात प्रदेशमय छे. अधर्मास्तिकाय असंख्य प्रदेशमय छे आकाश द्रव्य अनंत प्रदेशी छे. जीव द्रव्य असंख्यात प्रदेशी छे. जीव द्रव्य अनंता जाणवा. तथा पुद्गल परमाणुआ अनंत प्रदेशी छे, अने एकेक परमाणुआमां अनंता पर्याय रह्या छे. परमाणुआ अनंत छे. ए रीते पांच द्रव्य सप्रदेशी छे. अने कालद्रव्य अप्रदेशी छे, एनो गणित काल तो उत्पाद व्ययरुप पलटण स्वभावे अढी द्वीप प्रमाणे जाणवो ए रीते षड् द्रव्यमां सप्रदेशी अने अप्रदेशी विचार कह्यो.

षड द्रव्यमां त्रण द्रव्य एक, अने त्रण द्रव्य अनेक जाणवां. केमके धर्मास्तिकाय द्रव्य

असंख्यात प्रदेशी लोकव्यापी एक जाणवुं. तेमज अधर्मास्तिकाय द्रव्य असंख्यात प्रदेशी लोकव्यापी एक जाणवुं. तेमज आकाशास्तिकाय द्रव्य पण अनंत प्रदेशी लोकालोकव्यापी एक जाणवुं, एटले ए त्रण द्रव्य ते एक कहीए, अने जीवद्रव्य छे ते लोक व्यापी अनंता जाणवां, ते एकेक जीवना असंख्याता प्रदेश छे, अने एकेक प्रदेशे अनंति कर्मनी वर्गणाना थोकडा लाग्या छे. तथा जीव थकी रहीत घटपट दंड प्रमुख बीजा पुद्गलना परमाणुआ छुटा पण अनंता छे, माटे जीव थकी पुद्गल द्रव्य अनंतगुणां जाणवां, अने एककी कर्म वर्गणामां अनंत पुद्गल परमाणुआ रह्या छे ते परमाणुआ द्रव्यथकी स-

दाकाळ शाश्वता छे, माटे एकेक परमाणुआ-मां अनंता उत्पाद् व्ययरुप कालना समय अ-तीतकाल व्यतीत थइ गया. तथा हजी पण अनंता समय आवतेकाले व्यतीत थाशे, अ-ने परमाणुआतो तेना तेज सदाकाळ शाश्वता छे. माटे पुद्गल द्रव्यथकी पण काळद्रव्यना समय अनंता जाणवा, एरीते जीव पुद्गल अने काल ए त्रण अनेक कहीए. एरीते एक अनेकनो विचार षड् द्रव्यमां कह्यो.

हवे षड् द्रव्यमां क्षेत्र अने क्षेत्रीनो विचार दर्शावे छे.

छ द्रव्यमां आकाश द्रव्य, क्षेत्र छे अने बाकीनां धर्म, अधर्म, काल, पुद्गल, अने आत्मा, ए पांच द्रव्य आकाश क्षेत्रमां रहे छे,

माटे क्षेत्री जाणवां. ते केवी रीते रह्यां छे ते बतावे छे. आंखनी पांपणना एक वाळ ग्रहण करीने तेना खंड (भाग) एवा करी एके एक खंडना बे खंड ना थाय, एवा सूक्ष्म खंड प्रमाणे आकाश क्षेत्र लइए, तेटलामां आकाशना असंख्यता प्रदेश रह्या छे. अने तेटलामां धर्मास्तिकायना असंख्यात प्रदेश छे. तथा अधर्मास्तिकायना पण असंख्यात प्रदेश छे. अने निगोदीया गोळापण असंख्याता रह्या छे, ते सर्व पडया मुकीने ते मांहेलो एक गोळो लहीए ते एक गोळामां असंख्याती निगोद रही छे. ते असंख्याती निगोद पडती मुकीने ते मांहेथी एक लहीए, ते एक निगोदमां पण अनंता जीव रह्या छे, ते जीवनी

गणत्री बतावे छे, एक अतीतकाल कहेतां ए-
टले आगळ छेडा रहीत, अनंतो काल गयो,
तथा अनागत काल ते पण छेडा रहीत छे.
ते सर्वेना जेटला समय थाय, तेनी साथे वर्त
मान कालनो एक समय पण गणवो. एटले
अतीत अनागत अने वर्तमान कालना जेटला
समय थाय, ते सर्वने अनंतगुणा करीए एट-
ला जीव एक निगोदमां रह्या छे. ते सर्व जीव
पडया मुकीने ते मांहेथी मात्र एक जीव लइए
ते एक जीवना असंख्याता प्रदेश छे. ते एके-
का प्रदेशे अनंती कर्मनी वर्गणाओ लागी छे.
ते सर्व वर्गणाओ पडती मुकीने ते मांहेथी
एक वर्गणा लहीए, ते एक वर्गणामां अनंता
पुद्गल परमाणुआ रह्या छे. ते बतावे छे.

प्रथम परमाणुआना बे भेद छे एक छुटा परमाणु अने बीजा खंधना. वळी बे भेद छे. एक जीव सहीत खंध, अने बीजा जीव रहीत खंध, ते घटपट दंड प्रमुख अजीव खंध जाणवा. तीहां प्रथम जीव सहित खंधनो विचार लखीए छीए.

बे परमाणुआ भेला थाय ते वारे द्वयणुक खंध कहेवाय छे. त्रण परमाणुआ भेला थाय तेवारे त्र्यणुक खंध कहेवाय छे, एम असंख्याता प्रमाणुआ भेळा थाय त्यारे असंख्याताणुक खंध कहेवाय छे, एटला परमाणुआनो खंध थाय तीहां सुधीना खंध ते सर्वे जीवने ग्रहण करवा योग्य थता नथी. एटला परमाणुआना खंधने कोइ जीव ग्र-

हण करी शकतो नथी. परंतु अभव्य राशिना जीव चुम्मोत्तरमे बोले छे, ते थकी अनंत गुणाधिक परमाणुआ जेवारे भेला थाय. तेवारे औदारिक शरीरने लेवा योग्य वरगणा थाय. अने ते औदारिकनी वर्गणाथी अनंत गुणाधिक दलीआं जेवारे भेलां थाय तेवारे वैक्रिय शरीरने लेवा योग्य वरगणा थायछे, अने वैक्रियनी वर्गणाथी अनंत गुणाधिक दळीयां जेवारे भेळां थाय, तेवारे आहारक शरीरने लेवा योग्य वर्गणा थायछे अने आहारकनी वर्गणाथी अनंतगुणाधिक दळीयां जेवारे भेळां थाय तेवारे तैजस शरीरने लेवा योग्य वर्गणा थायछे. अने तैजसनी वर्गणाथी अनंतगुणाधिक दळीयां जेवारे भेळां थाय

तेवारे एक भाषाने लेवा योग्य वर्गणा थाय छे तथा भाषानी वर्गणाथी अनंत गुणाधिकमय जेवारे दळीयां भेगां थाय, तेवारे एक श्वासोश्वासने लेवा योग्य वर्गणा थाय. ते श्वासोश्वासनी वर्गणाथी जेवारे अनंत गुणाधिकमय दळीआं भेगां थाय, तेवारे एक मनने लेवा योग्य वर्गणा थाय. ए सातमी मनोवर्गणाथकी पण आठमी कर्म वर्गणामां अनंतगुणाधिक परमाणुआ जाणवा. एवा जीवने रागद्वेषनी अशुद्धताथी अनंत कर्मनी वर्गणाओ लागी छे. तेणे करी जीवना ज्ञानादिक गुणदबाई गया छे. माटे जीव थकी पुद्‌गल द्रव्य अनंत गुणा जाणवा. ते पुद्‌गलरूपी छे. अचेतन छे. सक्रिय छे. पूरणगलन छे. आ

जीवे अनंती पुदगल परमाणुआ रुपी अेठ ग्रहण वारंवार करी, तोपण तेथी तृप्ति पामतो नथी, पारकी वस्तु पोतानी मानी बेठो छे, अहो जीव द्रव्य अनंत शक्तिवाळुं तेने पुद्-गल द्रव्ये पोताना कबजामां लीधुं छे, तेने संगे राच्यो माच्यो छे, माटे परवस्तु उपरथी मोह उतारवो, अने पुद्गल द्रव्यपर वस्तु जा-णी तेनाथी दूर रेहेवु ए सार छे.

हवे वर्गणानु स्वरुप कहे छे.

पूर्वे कहेली आठ वर्गणा जीवने अनादि काळथी लागी छे. औदारिक वैक्रिय आहा-रक तैजस ए चार वर्गणा बादर छे. तेमां पांच वर्ण, बे गंध, पांच रस, अने आठ स्पर्श ए वीश गुण जाणवा, बाकीनी चार वर्गणा

सूक्ष्म छे. तेमां सोळ गुण छे. तथा एक परमाणुआमां एक वर्ण, एक गंध, एक रस, अने बे स्पर्श मळी पांच गुण छे, ते परमाणुआ वधशे घटशे नहीं. छे तेटलाने तेटला रहेवाना, पुद्गल परमाणुआथकी कालना समय अनंत गुणा जाणवा. ए प्रकारे जीवनी तथा अजीवनी वेहेंचण करतां धारतां विचारतां समकितनी प्राप्ति थाय छे.

हवे ए छ द्रव्यमां सक्रिय केटलां अने अक्रिय केटलां ते बतावे छे.

निश्चय नये करी छए द्रव्य सक्रिय छे. अने व्यवहार नये करी चार द्रव्य अक्रिय छे, धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाश द्रव्य,

अने काल, ए चार अक्रिय छे. जीव, अने पुद्गल, ए बे द्रव्य सक्रिय व्यवहार नये करीछे धर्मास्तिकाय द्रव्य ते जीव अने पुद्गल ए बे द्रव्यने पोतानी चलण सहायरुप क्रिया करतो जाय छे. तथा निश्चय नये करी अधर्मास्तिकाय पण जीव द्रव्य अने पुद्गल द्रव्यने पोतानी स्थिर सहाय गुणरुप क्रिया करतो जाय छे. तथा निश्चय नये करी आकाशास्तिकाय द्रव्य पण पोतानी अवगाहनारुप क्रिया जीव पुद्गलने करतो जाय छे. तथा निश्चय नये करी काल द्रव्य जे ते पण जीव अजीवरुप वस्तुमां पोतानी वर्तनारुप क्रिया करतो जाय छे. तथा निश्चय नये करी तो जीव द्रव्य पण पोताना स्वरुपमां रमवारुप

क्रिया करतो जाय छे, केमके जो निश्चय नये करी शुभाशुभ रुप विभाव दशामां रमण करवारुप क्रिया करतो होय तो कोइ काळे जीव मोक्ष पामेज नहीं. माटे निश्चय नये करीने तो जीव पोताना स्वरुपमां रमवा रुपज क्रिया करेछे. निश्चय नये करी पुद्‌गल परमाणुआ पण अनादि काळना पोतानी मळवा विखरवारुप क्रिया करता जाय छे. ए रीते छए द्रव्य निश्चय नये करी पोतपोतानी क्रिया करे छे माटे सक्रिय छे.

व्यवहार नये करी धर्म, अधर्म, आकाश अने काळ, ए चार द्रव्य अक्रिय जाणवा. तथा जीव अने पुद्‌गल ए बे द्रव्य सक्रिय जाणवां. कारण के व्यवहार नयने मते

जीव, रागद्वेषरूप अशुद्धताए करी समय समय अनंता पुद्गल परमाणुआनुं ग्रहणरूप क्रिया करे छे, अने पुद्गल परमाणुआने वळगवानो स्वभाव छे, माटे पुद्गल परमाणुआ वळगवारूप क्रिया करे छे, माटे अनादिकाळना जीव अने पुद्गल ए बे द्रव्य मळवा विखरवारूप क्रिया करे छे माटे सक्रिय जाणवां.

हवे ए छ द्रव्यमां नित्य केटलां द्रव्य अने अनित्य केटलां ते बतावे छे. निश्चय नये करी छए द्रव्य नित्य छे. अने निश्चय नये करी छए द्रव्य अनित्यपण छे. तथा व्यवहार नये करी तो चार द्रव्य नित्य जाणवां. अने बे द्रव्य अनित्य जाणवां. धर्मास्ति कायना अ-

रुपी, अचेतन, अक्रिय, अने चलण सहाय, ए चार गुण, अने पर्यायमां धर्मास्तिकायनो एक खंध, ए पांच नित्य जाणवा. तथा देश, प्रदेश, अने अगुरु लघु, ए त्रण पर्याय अनित्य जाणवा, अधर्मास्तिकायना पण अरुपी, अचेतन, अक्रिय, अने स्थिति सहाय, ए चार गुण तथा पर्यायमां अधर्मास्तिकायनो खंध, ए पांच नित्य जाणवा अने देश, प्रदेश, तथा अगुरु लघु, ए पर्याय अनित्य जाणवा. आकाशास्तिकायना अरुपी अचेतन अक्रिय अने चोथो अवगाहना, ए चारगुण तथा पर्यायमां खंध, ए पांच नित्य जाणवा. तथा देश, प्रदेश, अने अगुरु लघु, ए त्रण पर्याय अनित्य जाणवा. काळ द्रव्यना अरुपी, अचेतन, अक्रिय, अने

वर्तना लक्षण, ए चारगुण नित्य जाणवा. तथा अतीत, अनागत, अने वर्तमामान तथा अगुरु लघु ए चार पर्याय अनित्य जाणवा, पुद्गल द्रव्यना रुपी [1] अचेतन, [2] सक्रिय, [3] पुरण, [4] गलन मीळन विखरण, ए चार गुण नित्य जाणवा. तथा [1] वर्ण [2] गंध [3] रस अने [4] स्पर्श अगुरु लघु सहीत ए चार पर्याय अनित्य जाणवा जीवद्रव्यना [1] ज्ञान [2] दर्शन [3] चारित्र अने [4] वीर्य ए चार गुण, अने अव्याबाध, अमौर्तिक अनवगाह, एम सात नित्य जाणवा. एक अगुरु लघु पर्याय जीवनो अनित्य जाणवो, ए रीते निश्चय नये करी छे द्रव्य नित्य पण कहीए. अने अनित्य पण कहीए.

हवे व्यवहार नये करी धर्म, अधर्म, आकाश, अने काल, ए चार द्रव्य नित्य कहीए. तथा जीव अने पुद्गल ए बे द्रव्य अनित्य जाणवा. कारण के व्यवहार नये करी जीव चारगतिमां जन्म मरणे करी देवता, मनुष्य, तीर्यंच, नारकीरुप नवा नवा भव धारण करे छे. माटे अनित्य कहीए. तथा व्यवहार नये करी पुद्गल द्रव्यना खंध पण सर्व अनित्य जाणवा. कारण के पुद्गल द्रव्यना खंध बने छे, अने पाछा विखरे छे. माटे अनित्य जाणवा. अने वळी द्रव्यास्तिकायने मते जीव असंख्यात प्रदेशी नित्य सदाकाल शाश्वतो छे. अने अशुद्ध अनित्य पर्याय करी जीव अशाश्वतो जाणवो केमके अशुद्ध अनित्य प

यीये करी जीव चार गतिरूप संसारमां उत्पाद् व्ययरूप पलटण स्वभावे वर्ते छे. जेके आवी रीते मनुष्य भवना पर्यायनो व्यय करी अने देवताना भवना पर्यायनो उत्पाद थयो वळी तीर्यंच भवना पर्यायनो व्यय थयो, अने मनुष्य भवना पर्यायनो उत्पाद थयो एम अशुद्ध अनित्य पर्याय करी जीव उत्पाद व्ययरूप पलटण स्वभावे चार गतिरूप संसारमां सदाकाल वर्ते छे. अने जीव एनो ए ध्रुवपणे साश्वतो छे, तथा जन्म मरण थाय छे ते सर्व उत्पाद, व्यय, थाय छे. माटे द्रव्यास्तिक नये करी जीवने नित्य समजवो. अने पर्यायास्ति नये करी जीवने अनित्य केहेवामां आवे छे. ए रीते, षड् द्रव्यमां निश्चय

व्यवहारे करी निश्चय नित्यपणु जाणवुं.

षड् द्रव्यमां जीव द्रव्यने पांच द्रव्य कारण रूप जाणवां. अने जीव द्रव्य अकारण जाणवुं. जेमके जीवकर्ता अने तेने धर्मास्तिकाय कारण मळ्युं, तेवारे जीवने चालवा हालवा रुप कार्य थयुं तेमज जीवकर्ता अने तेने अधर्मास्तिकाय रुप कारण मळ्यु, तेवारे जीवने स्थिर रहेवा रुप कार्य नीपन्युं तेमज जीवकर्ता अने तेने आकाशास्तिकाय कारण मळ्युं तेवारे जीवने आवगाहना रुप कार्य बन्युं. तेमज जीवकर्ता अने तेने पुद्गलास्तिकाय उपकारण मळ्युं तेवारे जीवने समय समय अनंता कर्मरुप परमाणुआ लेवा खेरववा रुप कार्य नीपज्युं. तेमज जीव द्रव्यकर्ता

अने तेने काल द्रव्य कारण मळ्युं तेवारे नवा पुराणा वर्तनारुप कार्य नीपन्युं ए रीते षड् द्रव्यमां जीवने पांचे द्रव्य कारण जाणवां. अने जीव पोते अकारण छे.

घणी प्रतिओमां संक्षेपे एटलुं छे जे छ द्रव्यमां एक जीव द्रव्य कारण छे, बाकीनां धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय, पुद्गलास्तिकाय, काल, ए पांच द्रव्य अकारण छे, ए वात पण घणी रीते मळती छे, माटे जे बहुश्रुत कहे ते खरुं. आगम सार ग्रंथकर्तानी ध्यानमां तो एम आवे छे के जीव द्रव्य कारण, अने पांच द्रव्य, अकारण एम संभवे छे.

निश्चय नये करी छे ए द्रव्य पोते पो-

तामा स्वरुपना कर्ता छे. अने व्यवहार नये करी अनेक नयनी अपेक्षाए जोतां तो एक जीव द्रव्य कर्ता, अने पांच द्रव्य अकर्ता जाणवां. ते आवी रीते जे व्यवहार नयनु छ भेद छे. तिहां प्रथम शुद्ध व्यवहार नये करी जीव शुद्ध निर्मळ कर्म थकी रहीत एवु पोतानु स्वरुप नीपजाववुं तेनो कर्ता जाणवो, एटले जे जे (चालु) गुणठाणांनु छोडवुं, अने उपरनां गुणठाणांनु लेवुं, तेने शुद्ध व्यवहार नये कर्ता कहीए. एटले पहेले गुणठाणे अनंतानुबंधिआनी चोकडी हती ते खपावी अने चोथे गुणठाणे आव्यो ते वारे जीवने एक समकित गुण निरावरण थयो, अने अप्रत्याखानीयानी चोकडी खपावी तेवारे पां-

चमुं गुणठाणु प्राप्त करी देशविरति गुण प्राप्त कर्यो. तथा प्रत्याख्यानीयानी चोकडी खपावी तेवारे छठे सातमे गुणठाणे सर्वविरति गुण पाम्यो. अगीआरमे बारमे गुणठाणे पहोंची रागद्वेष रुप मोहनीय कर्म खपावी बारमे गुणठाणे घातीकर्मनो क्षय करी तेरमे गुणठाणे केवळ ज्ञान पाम्यो. ए रीते जेम जेम पूर्वनां गुणठाणांनु छोडवुं, अने उपरनां गुणठाणांनु ग्रहण करवुं, तेने शुद्ध व्यवहार नय कहीए. जेम जेम जीव कर्मरुप अशुद्धताने टाळे, अने गुण रुप शुद्धताने नीपजावे, ते शुद्ध व्यवहार नय जाणवो.

हवे बीजा अशुद्ध नय व्यवहारे जीव-

मां अज्ञान रागद्वेष अनादिकाळना बहु थइ लागा छे. तेणे करी जीवमां अशुद्धपणु जाणवुं. ए अशुद्धताए करी जीवने समय समय अनंतां कर्मरूप दलीआं लागे छे. ए अशुद्धता अनादिकाळनी जाणवी, ए अशुद्ध व्यवहार नये करी जीवकर्ता तेनुं स्वरुप जाणवुं. हवे त्रीजा शुभ व्यवहार नये करी जीव दान, शील, तप भावना, पुजा, प्रभावना, सेवा, भक्ति, साहम्मी वत्सल विनय. वैयावच्च. उपकार करुणा, दया, यत्ना, मीठुं मनोहर वचन बोलवुं. सर्व जीवनुं रुडुं चितववुं. ए आदि अनेक प्रकारनी जीवने. शुभ करणी जाणवी, ए शुभ व्यवहार नये करी जीवकर्ता कहीए. चोथा अशुभ व्यवहार नये करी जी-

व क्रोध, मान, माया, लोभ, विषय, कषाय, हास्य, रति, अरति भय, शोक, दुगंछा, निद्रा, चाडी, ममता, हिंसा, मृषा अदत्त, मैथुन, परिग्रह, ए आदि अनेक प्रकारनी जीवने अशुभ करणी कहीए. ए अशुभ व्यवहार नये करी जीवकर्ता जाणवो.

हवे पांचमा उपचरित व्यवहार नये करी जीव, घरकुटुंब, परिवार, हाट वखार गामगरास, देश, चाकर, दास, दासी, वाणोतर, राज्यवाडी, वन, आरामकुवा, सरोवर, ए आदि अनेक प्रकारनी वस्तु ते पोतानाथी प्रत्यक्ष पणे जुदी छे, तेने जीव अज्ञानपणे पोतानी करी जाणे छे. तेने माहरु माहरु करतो फरे छे, तेनी वृद्धि देखी खुशी थाय छे. ते-

नो नाश देखी रडे छे, कुटे छे, शोक करेछे, अने तेने माटे पोताना प्राणनो पण नाश करे छे. अने तेने पोतानुं मानी ते पापनो अधिकारी पोते थायछे, एरीते उपचरित व्यवहार नये जीवने कर्ता जाणवो.

हवे छठ्ठा अनुपचारित व्यवहार नये करी जीव शरीरआदि, परवस्तु जे पोताना स्वरूपथी प्रत्यक्ष पणे जुदी छे, पण परिणामिक भावे लोली भूत पणे एकठी मली रही छे, तेने जीव पोतानी करी जाणे छे, पण एवां शरीर, आ जीव अनंतीवार पाम्यो, अने अनंतीवार ते शरीरोनो त्याग कर्यो, तोपण अज्ञानपणे आ जीव तेने पोतानु करी जाणेछे, तेने वास्ते अनेक प्रकारनी हिंसा करे छे, अ-

सत्य वचन बोले छे, अदत्त [illegible] करे छे, पण अंते ते वस्तु पोतानी थती नथी. पण ए करी जीव भारे थाय छे ए रीते अनुपचरित् व्यवहार नये करी जीव कर्त्ता जाणवो. ए रीते छ प्रकारे व्यवहार नयने मते जीवने कर्त्तापणु देखाड्युं.

सव्वगय इयर—कहेतां सर्वगत एटले सर्व व्यापी द्रव्य केटलां अने इयर कहेतां देश व्यापी द्रव्य, छ द्रव्यमां केटलां पामीए, ते कहे छे.

षड् द्रव्यमां एक आकाश द्रव्य, सर्व लोकालोक व्यापी छे, अने पांच द्रव्य देश व्यापी जाणवां, कारण के धर्मास्तिकाय असंख्यात प्रदेशी लोक व्यापी जाणवुं. अधर्मा-

स्तिकाय द्रव्य पण असंख्यात प्रदेसी लोक व्यापी जाणवुं. तथा कालद्रव्य गणितकाल ते अढीद्वीप व्यापी जाणवुं. तथा जीवद्रव्य पण लोकव्यापी जाणवुं, तथा पुद्गल • द्रव्य पण एकेक जीवने, सत्ताए अनंता कर्मरुप पुद्गल परमाणुआ लाग्या छे. तथा ते थकी बीजा छुटा लोक व्यापी पुद्गल परमाणुआ अनंता छे. ते सर्व लोकव्यापी छे. एरीते ए पांच द्रव्य देशव्यापी जाणवां. अने एक आकाशास्तिकाय द्रव्य, अनंत प्रदेशी, सर्व व्यापी जाणवुं. एरीते छ द्रव्यमां सर्व व्यापी तथा देशव्यापीनुं स्वरुप जाणवुं.

छ ए द्रव्य अप्पवेसा अप्रवेशी एटले कोइ द्रव्य बीजा द्रव्यमां प्रवेश करी भली

जतुं नथी. अने एक बीजानुं कोइकोइनु काम पण करतां नथी. जेम कोइ दुकान उपर पांच वाणोतर रहेता होय ते सर्व पोतपोतानु काम फरमाव्यां मुजब कर्या करे. अने सहु सहुना मर्यादामां चाले तेम अहीआं छ द्रव्य भेळां रह्यां छे. अने पोतपोतानी मर्यादामां वर्ते छे, पण निश्चय नये कोइपण बीजामां मांहे मांहे भळतां नथी माटे अप्रदेशी जाणवां, एरीते षड् द्रव्यनु स्वरुप बार भांगे करी भव्य जीवोए जाणवुं.

हवे एकेका द्रव्यमां आठ पक्ष कहेछे.

आठ पक्षनां नाम—एक [१]नित्य, बीजो [२]अनित्य, त्रीजा [३]एक, चोथो [४]अनेक, पांचमो [५]सत्, छठो [६]असत्, सातमो [७]वक्तव्य, आठमो

८

अवक्तव्य.

धर्मास्तिकायना चारगुण नित्यछे. तथा पर्यायमां धर्मास्तिकायनो एक खंध नित्यछे. बाकीना देश, प्रदेश, अने अगुरु लघु, ए त्रण पर्याय अनित्य छे. अधर्मास्तिकायना चार गुण, तथा एक लोकप्रमाण खंध नित्य छे, बाकीना त्रण पर्याय अनित्य छे. आकाशास्तिकायना चार गुण, तथा लोकालोक प्रमाण खंध नित्य छे, अने देश, प्रदेश, तथा अगुरु लघु, ए त्रण पर्याय अनित्य छे. काळद्रव्यना चारगुण नित्य छे अने चार पर्याय अनित्य छे. पुद्गल द्रव्यना चार गुण नित्य छे, अने चार पर्याय अनित्य छे. जीव द्रव्यना चार गुण, अने त्रण पर्याय नित्य छे. अ-

ने एक अगुरु लघु पर्याय, अनित्य छे. ए-
रीते नित्यानित्य पक्ष कह्यो.

हवे एक अनेक पक्ष षड् द्रव्यमां बतावेछे.

एक धर्मास्तिकाय, बीजो अधर्मास्तिकाय, ए बे द्रव्यना खंध लोकाकाश प्रमाणे एक छे अने गुण अनंता छे. आकाश द्रव्यनो लोकाकाश प्रमाण खंध एक छे. अने गुणअनंता छे. पर्याय अनंता छे, प्रदेश अनंता छे, माटे अनेक छे. काल द्रव्यना वर्त्त वर्तनारुप गुण एक छे, अने बीजा गुण अनंता छे, पर्याय अनंता छे, समय अनंता छे, केमके अतीतकाले अनंता समय गया, अने अनागत काल अनंता समय आवशे, तथा वर्तमानकाले समय एक छे माटे अनेक पक्ष छे. पुद्-

णु छे. अने सर्व परमाणुमां पुद्गलपणुं ते एकज छे. माटे एक छे. जीव द्रव्य अनंता छे, एकेका जीवमां प्रदेश असंख्याता छे. तथा गुण अनंता छे पर्याय अनंता छे, ते अनेक पणुं छे, पण जीवीतव्य सर्व जीवोमां एक सरखो छे, माटे एकपणुं छे.

इहां शिष्य पुछे छे जे—सर्व जीव एक सरीखा छे तो मोक्षना जीव सिद्ध परमानंद मयी देखाय छे, अने संसारी जीव कर्मवश पडया दुःखी देखाय छे, अने ते सर्व जुदा जुदा देखाय छे, तेनुं केम ? तेहने उत्तर आपे छे के—निश्चय नये तो सर्व जीव सिद्ध समान छे, माटेज सर्व जीव कर्म खपावी सिद्ध थाय छे, तेथी सर्व जीवनी सत्ता एक छे व-

ळी शिष्य पुछे छे के जो सर्व जीव सिद्ध समान कहो छो तो अभव्य जीव पण सिद्ध समान छे एम ठर्युं, अने तेतो मोक्ष जाता नथी, तेनु केम ? तेने उत्तर आपे छे जे—अभव्य ने कर्म चीकणां छे, अने अभव्यमां परावर्त धर्म नथी, तेथी सिद्ध थता नथी. अभव्य ने कर्मनो संबंध अनादि अनंतमे भागे छे, तेथी कोइ काले ते मोक्ष जशे नही. अने भव्य जीवमां परावर्त धर्म छे माटे कारण सामग्री मीले पलटण पामे गुण श्रेणी चढीने सिद्ध थाय छे. पण आत्माना आठ रुचक प्रदेश निश्चय नयथी भव्य तथा अभव्य सर्वना सिद्ध समान छे, माटे सर्व जीवनी सत्ता एक सरखी छे कारण के ए आठ रुचक प्र-

देश ने कर्म बीलकुल लागतां नथी ते आचारांगसूत्रना लोक विजय अध्ययनमां कह्युं छे.

हवे सत् तथा असत् पक्ष कहे छ. ए छ द्रव्य स्वद्रव्य, स्वक्षेत्र, स्वकाल, अने स्वभाव, पणे सत् एटले छता छे. अने परद्रव्य परक्षेत्र, परकाल, अने परभावपणे असत् एटले असता छे. तेनी रीत बतावबाने माटे ए षट् द्रव्यनो द्रव्य, क्षेत्र, काळ, भाव, कहीए छीए.

धर्मास्तिकायनो मूलगुण चलण सहाय पणो ते स्वद्रव्य, अधर्मास्तिकायनो मूलगुण स्थिति सहायपणो ते स्वद्रव्य जाणवो. आकाशास्ति कायनो मूलगुण अवगाहपणो ते स्वद्रव्य, कालद्रव्यनो मूलगुण वर्तना लक्षण

पणो ते स्वद्रव्य जाणवो. तथा पुद्गल द्रव्यनो मूलगुण पूरण गलनपणो ते स्वद्रव्य जाणवो. अने जीव द्रव्यनो मूल गुण ज्ञानादिकचेतना लक्षणपणो ते स्वद्रव्य, ए छ द्रव्यनो स्वद्रव्यपणो कह्यो.

हवे षड् द्रव्य स्वक्षेत्र कहे छे—धर्मास्तिकाय अने अधर्मास्तिकायनो स्वक्षेत्र असंख्यात प्रदेशमय जाणवो. अने आकाश द्रव्यनो स्वक्षेत्र अनंत प्रदेशमय जाणवो. काल द्रव्यनो स्वक्षेत्र समयरुप छे. पुद्गल द्रव्यनो स्वक्षेत्र एक परमाणु छे. अने परमाणु आ अनंता छे, जीव द्रव्यनो स्वक्षेत्र एक जीवना असंख्याता प्रदेश छे.

हवे स्वकाल ते षड् द्रव्यमां अगुरु लघु-

नो छे, अने छए द्रव्यना पोत पोताना गुण पर्याय ते सर्व द्रव्यनो स्वभाव जाणवो, एटले धर्मास्तिकायमां पोतानाज द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव छे, पण बीजा पांच द्रव्यना नथी, तथा अधर्मास्ति कायमां पण पोतानाज स्वद्रव्य, क्षेत्रकाल, भाव छे, बीजा पांच द्रव्यना नथी. एमज आकाशास्ति कायने विषे आकाशनाज स्वद्रव्यादिक चार छे, पण बीजा पांच द्रव्यना नथी. तथा काल द्रव्यमां कालना स्वद्रव्यादिक चार छे, पण बीजा पांच द्रव्यना नथी. अने पुद्गल द्रव्यना स्वद्रव्यादि चार पुद्गल द्रव्यमां छे, बीजा पांच द्रव्यना नथी. तथा जीव द्रव्यना स्वद्रव्यादिक चार जीव द्रव्यमां पण बीजा पांच द्रव्य-

ना नथी. जे द्रव्य ते गुण पर्यायवंत द्रव्यथी अभेद पर्याय होय ते द्रव्य कहीए. तथा स्व धर्मनो आधारवंतपणो ते क्षेत्र कहीए, अने उत्पाद व्ययनी वर्तना ते काल कहीए, तथा विशेष गुण परिणति स्वभाव परिणति पर्याय प्रमुख ते स्वभाव कहीए.

अहीआं एक–भेद स्वभाव बीजो–अभेद स्वभाव त्रीजो–भव्य स्वभाव चोथो–अभव्य स्वभाव अने पांचमा–परम स्वभाव, ए पांच स्वभाव जाणवा. तेमां द्रव्यना सर्व धर्मने पोतपोताना स्व स्व कार्य करवे करी भेद स्वभाव छे. अने अवस्थानपणे अभेद स्वभाव छे. अणपलटण स्वभावे अभव्य स्वभाव छे. तथा पलटण स्वभाव भव्य स्वभाव

छे. अने द्रव्यना सर्व धर्म ते विशेष धर्मने अनुयायीज परिणमे ते माटे ते परम स्वभाव कहीए. ए सामान्य स्वभाव जाणवा. ए रीते छए द्रव्य स्वगुणे सत् छे अने परगुणे. असत् छे.

हवे छए द्रव्यमां वक्तव्य तथा अवक्तव्य पक्ष कहे छे.

ए छ द्रव्यमां अनंता गुण पर्याय ते वक्तव्य एटले वचन कहेवा योग्य छे, अने अनंता गुण पर्याय ते अवक्तव्य एटले वचने करी कही शकाय नही एवा छे. तीहां केवळ ज्ञानी माहाराजे ज्ञाने करी समस्त भाव दीठा तेने अनंतमे भागे ज वक्तव्य एटले कहेवा योग्य हता ते कह्या वळी तेनो पण अनंतमो

भाग श्री गणधर देवे सूत्रमां गुंथ्यो, ते सूत्रमां गुंथ्यो तेने असंख्यातमे भागे हमणां आगम रह्यां छे. ए छ द्रव्यमां आठ पक्ष कह्या.

. हवे नित्य तथा अनित्य पक्षथी चतुर्भंगी उपनी ते बतावे छे. जेनी आदि नथी अने अंत नथी ते अनादि अनंत पहेलो भांगो जाणवो. तथा जेनी आदि नथी पण अंत छे, ते अनादि सांत बीजो भांगो जाणवो. तथा जेनी आदि पण छे अने अंत पण छे, ते सादि सांत त्रीजो भांगो जाणवो. वळी जेनी आदि छे, पण अंत नथी, ते सादि अनंत नामे चोथो भांगो जाणवो.

हवे ए चार भांगा छे ते द्रव्यने केवी रीते लागे छे, ते बतावे छे.

जीव द्रव्यमां ज्ञानादिक गुण ते अनादि अनंत छे. नित्य छे. पण भव्य जीवने कर्म साथे संबंध अनादि छे. पण सिद्ध थाय ते ते वारे अंत आवे छे. तथा ए अनादि सांत बीजा भांगो जाणवा. अने देवता मनुष्य तीर्यंच, नारकी प्रमुखना भव करवा, ते सादि सांत भांगो छे. अने जे जीव कर्म खपावी मोक्ष गया तेनी मोक्षपणे आदी छे. अने पाछु संसारमां कोइ वखत आववुं नथी माटे अंत नथी, तेथी ए सादि अनंत भांगो छे. अभव्य जीव साथे कर्मनो संबंध अनादि अनंत छे. जीव द्रव्यना चार गुण अनादि अनंत छे. जीवने कर्म साथे संयोग ते अनादि सांत छे, पण अभव्यने नही. अभव्यने कर्म संयोग

अनादि अनंत छे.

हवे धर्मास्तिकायमां चार गुण अने पांचमो खंध ते अनादि अनंत छे. अने अनादि सांत भांगो नथी. तेथी देश प्रदेश अगुरु लघु ते सादि सात भांगो छे. तथा सिद्धना जीव धर्मास्तिकायना जे प्रदेशे रह्या छे. ते प्रदेश आश्रीने सादि अनंत भांगो छे. एवीज रीते अधर्मास्तिकायमां पण चो भंगी जाणवी.

आकाश द्रव्यमां गुण तथा खंध अनादि अनंत छे. बीजो भांगो नथी. अने देश प्रदेश, तथा अगुरु लघु, सादि सांत छे. तथा सिद्धना जीवनी साथे जे संबंध ते सादि अनंत छे. पुद्गल द्रव्यमां गुण अनादि अनंत

छे.जीव पुदगलनो संबंध अभव्यने अनादि अनंत छे. भव्य जीवने अनादि सांत छे. पुदगलना खंध सर्व सादि सांत छे. जे खंध बंधाया ते स्थिति प्रमाणे रही खीरे छे, वळी नवा बंधाय छे. माटे सादी अनंत भांगो पुद्गल द्रव्यमां नथी.

काल द्रव्यमां गुण चार अनादि अनंत छे. पर्यायमां अतीत काल अनादि सांत छे. अने वर्तमानकाळ सादि सांत छे. अनागत काळ सादि अनंत छे. ए कालनुं स्वरुप सर्व उपचारथी छे. एवी रीते काल द्रव्यमां चो भंगी जाणवी.

हवे द्रव्य क्षेत्र काल तथा भावमां चो भंगी कहे छे.

जीव द्रव्यमां स्वद्रव्यथी ज्ञानादिक गुण ते अनादि अनंत छे.

स्वक्षेत्र जीवना प्रदेश असंख्याता छे. ते सादि सांत छे. तत द्रूर्तनापणे फरे छे. ए हेतुथी अथवा अवगाहना माटे सादि सांत छे, पण छतिपणे तो अनादि अनंत छे. स्वकाल अगुरु लघुनो गुणे अनादि अनंत छे. अने अगुरु लघु गुणनो उपजवो, तथा वीणसवो ते सादि सांत छे. तथा स्वभाव गुण पर्याय ते अनादि अनंत छ अने भेदांतरे अगुरु लघु ते सादि सांत छे. धर्मास्ति कायमां स्वद्रव्य जे चलण सहाय गुण ते अनादि अनंत छे. अने स्वक्षेत्र असंख्यात प्रदेश लोक प्रमाण छे. ते अवगाहना पणे सादि सांत छे

स्वकाल ते अगुरु लघु गुणे करी अनादि अनंत छे. अने उत्पाद व्यय ते सादि सांत छे. तेम ज अधर्मास्ति कायना पण चार भांगा जाणवा, तथा आकाशास्ति कायमां स्वद्रव्य अवगाहना दानगुण ते अनादि अनंत छे. अने स्वक्षेत्र लोकालोक प्रमाण अनंत प्रदेश मय ते अनादि अनंत छे. स्वकाल ते अगुरु लघु गुण ते सर्वथापणे अनादि अनंत छे. अने उपजवे तथा वीणसवे करी सादि सांत छे.

स्वभाव ते चार गुण, तथा खंध अने अगुरु लघु ते अनादि अनंत छे, तथा देश प्रदेश ते सादि सांत छे. ते आकाश द्रव्यना बे भेद छे, एक चौदराज लोकनो खंध लोकाकाश प्रमाण ते सादि सांत छे, अने बी-

जो अलोकाकाशनो खंध ते सादि अनंत छे.

काल द्रव्यमां स्वद्रव्य जे नवा पुराण-वर्तना गुण ते अनादि अनंत छे. स्वक्षेत्र समय काल ते सादि सांत छे. केमके वर्तमान समय एक छे माटे तथा स्वकाल ते अनादि अनंत छे, स्व भाव ते गुणचार अने अगुरु लघुं अनादि अनंत छे. अतीतकाल अनादि सांत छे. वर्तमान काल सादि सांत छे. अनागत काल सादि अनंत छे.

पुद्गल द्रव्यमां स्वद्रव्य ते द्रव्यपणे जे पूरण गलन धर्म ते अनादि अनंत छे. अने स्वक्षेत्र परमाणु ते सादि सांत छे. स्वकाल स्थिति अगुरु लघु ते अनादि अनंत छे. अगुरु लघुनो उपजवो वीणसवो ते सादी सांत

छे. स्वभाव ते गुण चार अनादि अनंत छे. वर्णादि पर्याय चार वर्ण गंध रस अने स्पर्श ते सादि सांत छे. ए द्रव्यादि चारना पुद्गल द्रव्यमां चौभंगी जाणवी.

हवे छ द्रव्यना संबंध आश्रयीने चौभंगी देखाडे छे.

तीहां प्रथम आकाश द्रव्य छे. तेमां अलोकाकाशमां पांच द्रव्यमांनु कोइ पण द्रव्य नथी, एटले धर्मास्तिकाय अधर्मास्तिकाय पुद्गलास्तिकाय काल अने जीव आ पांच द्रव्य अलोकमां नथी.

लोकाकाशमां स्व सहीत छ द्रव्य छे, लोकाकाश द्रव्य तथा धर्मास्तिकाय द्रव्य अने आकाशास्तिकाय ए त्रण द्रव्य ते अनादि

अनंत छे. जे लोकाकाशना एकेक प्रदेशमां धर्म द्रव्य तथा अधर्म द्रव्यनो अकेक प्रदेश रह्यो छे. ते कोइ काले विछडशे नही. माटे अनादि अनंत जाणवो. आकाश क्षेत्र लोक सर्व अने जीव द्रव्यनो अनादि अनंत संबंध जाणवो. अने संसारी जीव कर्म सहीत तथा लोकना प्रदेशनो सादिसांत संबंध छे. लोकांत सिद्धक्षेत्रना सिद्ध जीवोनो आकाश प्रदे साथे सादिअनंत संबंध छे. लोकाकाश अने पुद्गल द्रव्यनो अनादिअनंत संबंध जाणवो. आकाश प्रदेशनी साथे पुद्गल परमाणुनो सादिसांत संबंध जाणवो. एम आकाश द्रव्यनी पेठे धर्मास्तिकाय तथा अधर्मास्तिकाय द्रव्यनो पण संबंध जाणवो. तथा नि

श्चय नये करी छए द्रव्य स्वस्वभावे परीणमी रह्या छे ते परीणाभी पणो सदा शाश्वतो छे ते माटे अनादि अनंत छे.

जीव द्रव्य तथा पुद्‌गल द्रव्य बंने मळी संबंधपणाने पामे छे, ते परपरिणामी पणे छे. ते परपरिणामीपणु अभव्य जीवने अनादि अनंत छे. अने भव्य जीवने अनादि सांत छे अने पुद्‌गलनो परिणामीपणो ते सत्ताए अनादि अनंत छे. अने पुद्‌गलनु मळवुं विखरवुं ते सादिसांत भांगे जाणवुं. जीव द्रव्य पुद्‌गल साथे मिल्यो सक्रिय छे. अने पुद्‌गल द्रव्यथी रहीत थाय तै वारे जीव द्रव्य अक्रिय छे. अने पुद्‌गल द्रव्य सदा सक्रिय छे.

हवे एक अनेक पक्षथी निश्चय ज्ञान क-

हेवाने नय कहे छे. सर्व द्रव्यमां अनेक स्व-भ।व छे. ते एक वचनथी कह्या जाय नही माटे मांहो मांहे नये करी संक्षेपपणे कहे छे.

मुळ नयना बे भेद छे एक द्रव्यार्थिक अने बीजो पर्यायार्थिक. तेमां उत्पाद व्यय पर्यायना गौण पणे अने प्रधानपणे द्रव्यनो गुण सत्ताने ग्रहे ते द्रव्यार्थिक नय कहीए तेना दश भेद छे.

१ सर्व द्रव्य नित्य छे ते नित्य द्रव्यार्थिक.

२ अगुरु लघु अने क्षेत्रनी अपेक्षा न करे मुळ गुणने पिंडपणे ग्रहे एक ते द्रव्यार्थिक

३ ज्ञानादिक गुणे सर्व जीव एक सरीखा छे माटे सर्व जीवने एक कहे स्वद्रव्यादिकने ग्रहे ते सत् द्रव्यार्थिक जेम सत् लक्षणं द्रव्यं

४ द्रव्यमां केहेवा योग्य गुण अंगीकार करे तें वक्तव्य द्रव्यार्थिक.

५ आत्माने अज्ञानी कही बोलाववो ते अशुद्ध द्रव्यार्थिक नय

६ सर्व द्रव्य गुण पर्याय सहीत छे एम केहेवुं ते अन्वय द्रव्यार्थिक

७ सर्व जीवनी मुल सत्ता एक छे ते परम द्रव्यार्थिक नय जाणवो.

८ सर्व जीवना आठ रुचक प्रदेश निर्मळ छे ते शुद्ध द्रव्यार्थिक नय

९ सर्व जीवना असंख्याता प्रदेश एक सरीखा छे ते सत्ता द्रव्यार्थिक नय

१० गुण गुणी एक छे ते परमभाव ग्राहक द्रव्यार्थिक नय जेम आत्माज्ञान रुप छे.

इत्यादिक द्रव्यार्थिक नयना दश भेद कह्या हवे पर्यायार्थिक नयना छ भेद कहे छे.

जे पर्यायने ग्रहे तेने पर्यायार्थिक नय कहे छे तेना छ भेद-

एक द्रव्य पर्याय, बीजो द्रव्य व्यंजन पर्याय, त्रीजो गुणपर्याय, चोथो गुण व्यंजन पर्याय, पांचमो स्वभाव पर्याय, छठ्ठो विभाग पर्याय ए छ छे.

१ जीवने भव्यपणुं तथा सिद्धपणु कहेवु ते द्रव्य पर्याय.

२ जे द्रव्यना प्रदेशनुं मान ते द्रव्य व्यंजन पर्याय.

३ एक गुणथी अनेकता थाय जेम धर्मा धर्मादि द्रव्य पोताना चलण सहकारादि

गुणथी अनेक जीव तथा पुद्गलने सहाय करे तेने गुण पर्याय नय कहे छे.

४ एक गुणना घणा भेद ते गुण व्यंजन पर्याय कहीए

५ स्वभाव पर्याय ते अगुरु लघु पर्याय थी जाणवो ए पांच पर्याय सर्व द्रव्यमां छे.

६ विभाव पर्याय ते जीव पुद्गल ए बे द्रव्यमां छे. तीहां जीव जे चार गतिना नवा नवा भव करे ते जीवमां विभाव पर्याय तथा पुद्गलमां खंधपणु ते विभाव पर्याय जाणवो.

हवे पर्यायना बीजा छ भेद कहे छे—एक अनादि नित्य पर्याय ते जेम पुद्गल द्रव्यनो मेरु प्रमुख. बीजो सादि नित्य पर्याय ते जीव द्रव्यनी सिद्धावस्था सिद्धावगाहनादिक ते सादि नित्य पर्याय छे.

त्रीजो अनित्य पर्याय ते समय समयमां द्रव्य उपजे वीणसे छे ते. सादि सांत पर्याया भव शरीराध्यव मायादयः इति नय चक्रे. चोथो अशुद्ध अनित्य पर्याय ते: जन्म मरण थाय छे, तेणे करी कहेवु. पांचमो उपाधि पर्याय ते कर्म सबंध. छठो शुद्ध पर्याय जे मूल पर्याय सर्व द्रव्यना एक सरीखा छे ते ए पर्यायार्थिकनु स्वरुप कह्यं. नय चक्र तथा आगमसार कर्त्ताना मते बीजा पर्यायना छ भेदमां तफावत पडे छे. तत्त्व केवली गम्यम्.

हवे सात नय केहे छे.

सातनय.

१. नैगम २ संग्रह ३ व्यवहार ४ रुजु-

सूत्र ५ शब्द ६ समभिरुढ ७ एवंभूत ए सात नय नांना जाणवां.

(१) नथी एक गमो ते जेनो तेने नैगम नय केहे छे, गुणनो एक अंश उपन्यो होय तो नैगम नय कहीए, जेम कोइ मनुष्यने चार आनी लाववानुं मन थयुं तेवारे वगडामां लाकडां लेवा चाल्यो, तेने रस्तामां बीजो कोइ माणस भेगो थयो तेणे पुछ्यु के, तुं कयां जाय छे तेवारे तेणे कह्युं के हुं, पावली लेवा जाउछुं. ते पावली तो हजु घडी नथी पण मनने विषे चिंतव्युं ते थइ एम गण्युं. तेम नैगम नय सर्व जीवने सिद्ध समान कहे छे. कारण के सर्व जीवोना आठ रुचक प्रदेश निर्मळ सिद्ध रुप छे, तेथीं एक अंशे शिद्ध छे,

ते माटे सिद्ध समान सर्व जीव कह्या. ते नैगम नयना त्रण भेद छे. अतीत नैगम, अनागत नैगम, अने वर्तमान नैगम आ प्रमाणे आगमसार ग्रंथ कर्त्ता कहे छे.

नय चक्र बालावबोध कर्त्ताए नैगम नयना त्रण भेद कह्या छे. १ आरोप, २ अंश ३ संकल्प, तथा विशेषावश्यकमां चोथो भेद पण उपचार पणे कहे छे. नथी एकगमो कहेतां अभिप्राय ते जेनो ते नैमम नय कहीए. एटले नैगम नय अनेक आशयी छे, ते नैगम नयना चार भेद छे. ते मध्ये आरोपना चार प्रकार छे.

१ द्रव्यारोप २ गुणारोप ३ कालारोप ४ कारणाद्यारोप.

१ गुणादिकने विषे द्रव्यपणो मानवो ते द्रव्यारोप. जेम वर्तना परिणाम ते पंचास्तिकायनो परिणमन धर्म छे. तेने काल द्रव्य कहीने बोलाव्यो. ए काल ते भिन्न पिंड रुप द्रव्य नथी. पण आरोपे द्रव्य कह्यो छे. माटे द्रव्यारोप जाणवो. द्रव्यने विषे गुणनो आरोप ते जेम ज्ञान गुण छे. पण ज्ञानी तेज आत्मा एम ज्ञानने आत्मा कह्यो, ते गुणारोप जाणवो. तथा जेम श्री महावीर स्वामीनुं निर्वाण थयां घणो काल गयो छे. पण आज दीवालीना दीवसे वीर निर्वाण छे. एम जे केहेवुं ते वर्तमान कालमां अतीत कालनो आरोप कर्यो. तथा आज श्री पद्मनाभ प्रभुनो निर्वाण छ एम जे कहेवुं ते वर्तमान कालमां

अनागतकालनो आरोप. एवी रीते अतीतना बे भेद छ. तथा अनागतना बे भेद छे तथा वर्तमानना पण बे भेद छे ते सर्व मळी कालारोपना ६ भेद जाणवा. चोथो वळी कारणने विषे कार्यनो आरोप करवो ते कारणाद्यारोप कहीए.

ते कारण चार छे १. उपादान कारण. २ निमित कारण. ३ असाधारण कारण. ४ अपेक्षा कारण तेमां बाह्यद्रव्य क्रिया ते साध्य सापेक्षवाळाने धर्मनुं निमित्त कारण छे तोपण एने धर्म कारण कहीए तेमज श्री तीर्थंकर मोक्षनु कारण छे, तेथी तेमणे 'तारयाणं' कह्या ते कारणने विषे कर्तापणानो आरोप कर्यो एम आरोपता अनेक प्रकारे छे ते का-

रणाद्यारोप.

वळी संकल्प नैगमना बे भेद छे १ स्व-परिणामरुप जे वीर्य चेतनानो जे नवो नवो क्षयोपशम लेवो ते. २ कार्यांतराये नवे भवे कार्ये नवो नवो उपयोग थाय ते. ए बे भेद थया. तथा अंश नैगमना पण बे भेद छे. १ भिन्नांशते जुदो अंश, स्कंधादिकनो, बीजो अभिन्नांशते जे आत्माना प्रदेश तथा गुणना अविभाग इत्यादिक ए सर्व नैगम नयना भेद जाणवा.

(२) हवे संग्रह नये कहेछे.

सामान्य वस्तु सत्ता संग्राहकः संग्रह स द्वि विधः सामान्य संग्रहः विशेष संग्रहश्च सामान्य संग्रहो द्विविधः मूलतऊत्तरश्च मूलतो

स्तित्वादि भेदतः षड्विधः ऊत्तरतो जाति समुदाय भेद रुपः जाततिः गवि गोत्वं घटे घटत्वं वनस्पतै वनस्पातित्वं समुदय तो सहकारात्मके वने सहकारवनं, मनुष्य समूहे मन्युष्य वृंद, इत्यादि समुदायरुपः अथवा द्रव्यनिति सामान्य संग्रहः जीव इति विशेष संग्रहः

अर्थ. सामान्ये करी मुल सर्व द्रव्य व्यापक नित्यत्वादिक सतापणे रह्या जे धर्म तेनो जे संग्रह करे तेने संग्रह नय कहे छे.

तेना बे भेद छे. एक सामान्य संग्रह बीजो विशेष संग्रह.

वळी सामान्य संग्रहना बे भेद छे, १ मुळ.सामान्य संग्रह २ उत्तर सामान्य संग्रह

वळी मुळ सामान्यना अस्तित्वादिक छ भेद छे तथा उतर सामान्यना बे भेद छे.

१ जाति सामान्य २ समुदाय सामान्य.

तीहां गायना समुहमां गोत्वरुप जाति छे तथा घट समुदायमां घटत्व पणो अने वनस्पतिमां वनस्पति पणो ते जाति सामान्य कह्यो. अने आंबाना समुहने विषे अंब वन कहे, तथा मनुष्यना समुहमां मनुष्य ग्रहण थाय ते समुदाय सामान्य. ए उत्तर सामान्य ते चक्षुदर्शन तथा अ चक्षुदर्शनने ग्राही छे, अने मूल सामान्य ते अवधि दर्सन तथा केवळ दर्शनथी ग्रहवाय छे.

अथवा छ द्रव्यना समुदायने द्रव्य केहेवु, ए सामान्य संग्रह, अने जीवने जीव द्र-

व्य कही अजीव द्रव्य थकी जुदो पाडवो, ते विशेष संग्रह. विशेषावश्यकमां संग्रह नयना चार भेद कह्या छे १ संग्रहीत संग्रह २ पिंडित संग्रह ३ अनुगम संग्रह ४ व्यतिरेक संग्रह.

१ सामान्यपणे वहेंचण विना ग्रहण थाय एवो जे उपयोग अथवा एवुं जे वचन अथवा एवो धर्म कोइपण वस्तुने विषे होय तेने संग्राहित संग्रह कहीए.

२ एक जाति माटे एकपणो मानीने ते एक मधे सर्वनो ग्रहण थाय जेम एगे आया एगे पुग्गले इत्यादि वस्तु अनंति छे पण जाति एक माटे ग्रहण थाय छे ते बीजो पिंडित संग्रह नय कहीए.

३ जे अनेक जीवरुप अनेक व्यक्ति छे ते सर्वमां पामीए, जेम सत् चित्मयो आत्मा एटले सर्व जीव तथा सर्व प्रदेश अने सर्व गुण ते जीवनां लक्षण छे ते अनुगम संग्रह नय कहीए.

जेना ना कहेवाथी तेनाथी ईतरनो सर्व संग्रहपणे ज्ञान थाय ते जेम अजीव छे तेवारे जे जीव नही ते, अजीव कहीए एटले कोइक जीव छे एम व्यतिरेक वचने ठर्यो तथा उपयोगे जीवनो संग्रह थाय छे, ते व्यतिरेक संग्रह कहीए.

एक नाम लीधाथी सर्व गुण पर्याय परिवार सहीत आवे ते संग्रह नय जाणवो.

द्रष्टांत—जेम कोईक मन्युष्ये प्रभाते दा-

तण करवाने अर्थे पोतानो घरना बारणे बेशीने चाकरने कह्युं के दातण लेइ आवो, ते वारे चाकर पुरुष पाणीनो लोटो रुमाल दातण एम सर्व चीज लइ आव्यो. हवे. शेठे तो एक दातण नाम लइने मंगाव्युं हतुं पण सर्वेनो संग्रह करी चाकर लइ आव्यो ते रीते संग्रह नय जाणवो.

(३) व्यवहार नय

संग्रह ग्रहीत वस्तु भेदांतरेण विभजनं व्यवहरणं, प्रवर्तनं वा व्यवहारः सद्वि विधः शुद्धोऽशुद्धश्च:

संग्रहनये ग्रहीत जे वस्तु तेने भेदांतरे वेहेचवुं. तेने व्यवहार नय कहे छे. जेम द्रव्य एवुं सामान्य नाम कह्युं, तेमां वली वेहेंचण

करीए जे द्रव्यना बे भेद छे, एक जीव द्रव्य, तथा बीजुं अजीव द्रव्य, वळी तेमां पण वहेंचण करीए जे जीवना बे भेद छे एक संसारी, बीजा सिद्ध, वळी तेमां पण संसारीना बे भेद एक स्थावर बीजो त्रस तेमां स्थावरना पांच भेद, पृथ्वीकाय, अप्काय, तेउकाय, वायुकाय, वनस्पतिकाय, वळी त्रसना चार भेद छे बेरेंद्री, तेरेंद्री, चौरेंद्री, पंचेंद्री, वळी पंचेंद्रीना चार भेद. देवता, मनुष्य, तीर्यंच अने नारकी एम उतरोतर जीवना ५६३ भेदनी वेहेचण इत्यादिक सर्व व्यवहार नयनो स्वभाव जाणवो. अथवा व्यवहरणं कहेतां प्रवर्तन तेना बे भेद छे १ शुद्ध व्यवहार २ अशुद्ध व्यवहार.

सर्व द्रव्यनी स्वरुप शुद्ध प्रवृत्ति–जेम धर्मास्तिकायनी चलण सहायता तथा अधर्मास्तिकायनी स्थिति सहायता तथा जीवनी ज्ञायकता इत्यादिकने वस्तुगत शुद्ध व्यवहार कहीए.

द्रव्यनो उत्सर्ग नीपजवा माटे जे रत्न त्रयीनी शुद्धता गुणस्थाने श्रेणी आरोहणरुप ते साधन शुद्ध व्यवहार कहीए.

अशुद्ध व्यवहारना बे भेद छे १ सद्भूत व्यवहार २ असद्भूत व्यवहार तेमां जे क्षेत्रे अवस्थाने अभेद संबंध रह्या जे ज्ञानादिगुण तेने परस्पर भेदे कहेवा ते सद्भूत व्यवहार. तथा हुं क्रोधी छुं. मानीछुं अथवा देवताछुं मनुष्यछुं. इत्यादि देवतापणे ते हेतुपणे परि-

णमतां प्रह्मा जे देवगति विपाकी कर्म तेने उदयरुप परभाव छे ते पण यथार्थ ज्ञान विना भेद ज्ञान शून्य जीव ते एक करी माने छे ते असद् अशुद्ध व्यवहार कहीए तेना व-ळी बे भेद छे.

१ आ शरीर मारु छे हुं शरीरी छु इत्यादि केहेवुं तेने संश्लेषित असद् भूत व्यवहार कहीए.

२ आ पुत्र मारो आ स्त्री कुटुंब धनधान्यादिक नवविध परिग्रह मारो छे एम जे केहेवुं ते असंश्लेषित असद्भूत व्यवहार नय कहीए. ते असंश्लेषित असद्भूत अशुद्ध व्यवहारना बे भेद छे. एक उपचरीत अने बीजो अनुपचरीत एम बे भेद जाणवा.

विशेषावश्यक महाभाष्यमां व्यवहार नयना मुल बे भेद छे.

१ वहेचणरुप व्यवहार.

२ प्रवृतिरुप व्यवहार.

प्रवृति व्यवहारना त्रण भेद छे. वस्तु प्रवृत्ति, साधनप्रवृत्ति, लौकीक प्रवृति तेमां वळी साधन प्रवृतिना त्रण भेद छे.

१ जे अरिहंतनी आज्ञाये शुद्ध साधन मार्गे इह लोक संसार पुद्गल भोग आ संसादि दोष रहीत जे रत्न त्रयीनी परिणति परभव त्याग सहीत ते लोकोत्तर साधन प्रवृत्ति नामे पेहेलो भेद जाणवो.

२ स्याद्वाद विना मिथ्याभि निवेष सहीत साधन प्रवृति ते दुप्रावचनिक-साधन

प्रवृत्ति.

३ लोकना स्व स्वदेश कुलनी चाले प्रवृति ते लोक व्यवहार प्रवृति ए त्रण प्रवृत्ति कहीए.

बाह्य स्वरुप देखीने भेदनी वेहेंचण करे अने जे बाहीर देखाता गुणनेज माने पण अंतरंग सत्तान माने तेने व्यवहार कहे छे, आ नयमां आचार क्रिया मुख्य छे. व्यवहार नये करी जीवनी अवस्था अनेक प्रकारे छे.

वळी व्यवहार नयना छ भेद छे.

१ शुद्ध व्यवहार. ते आगला गुण ठाणानो छोडवो अने उपरना गुण ठाणानुं ग्रहण करवुं. तेने शुद्ध व्यवहार नय कहे, ते

अथवा ज्ञान दर्शन चारित्र गुण ते निश्चय नय एक रुप छे पण ते शिष्यने समजाववाने जुदा जुदा भेद कहेवा ते शुद्ध व्यवहार नय जाणवो.

२ जीवमां अज्ञान रागद्वेष लाग्या छे ते अशुद्ध पणो छे माटे अशुद्ध व्यवहार जाणवो.

३ पुण्यनी क्रिया करवी ते शुभ व्यवहार

४ पापनी क्रिया करवी ते अशुभ व्यवहार.

५ धन कुटुंब प्रत्यक्षपणे आपणाथी जुदा छे पण जीव आपणा करी जाण्या छे ते उप चरित व्यवहार.

६ शरीर लेश्या योग इंद्रि इत्यादि वस्तु आत्मा थकी जुदी छे तेने आपणी करी

जीव माने छे ते अनुप चरित व्यवहार नय जाणवो.

इत्यादि व्यवहार नयनुं स्वरुप जाणवुं.

(४) हवे चोथे रुजु सूत्र नय कहे छे.

४ रुजुसूत्रनय.

रुजु कहेतां सरल छे श्रुत कहेतां बोध ते जेनो ते रुजु सूत्र नय कहेवाय छे रुजु शब्दे—अवक्र एटले समो छे श्रुत ते जेने ते रुजु सूत्र नय कहीए अथवा रुजु—अवक्रपणे वस्तु ने जाणे, कहे, तेने रुजू सूत्र नय कहे छे.

जे अतीतकाल अने अनागत कालनी अपेक्षा न करे पण वर्तमान काल जे वस्तु जेवागुणे परिणमे वर्ते ते वस्तुने तेवाज परीणामे माने तेने ऋजुसूत्र नय कहे छे. ए नय

परीणाम ग्राही छे. जेम कोइ जीव ग्रहस्थ छे. पण अंतरंग साधुसमान परीणाम छे. तो ते जीवने साधु कहे. अथवा कोइक जीव साधुने वेषे छे. पण मनना परीणाम विषयाभिलाषा सहीत छे. तो ते जीव अव्रती छे. एम ऋजु-सूत्र नयनो मानवो छे. ते ऋजुसूत्र नयना बे भेद छे. एक सूक्ष्म ऋजुसूत्र नय, अने बीजो स्थूल ऋजुसूत्र नय एम बे भेद छे.

सदाकाल सर्व वस्तुमां एक वर्तमान स-मय वर्ते छे. एटले जे जीव अतीतकालने विषे अज्ञानी हतो. अने अनागत काले अज्ञानी थशे एम बे कालनी अपेक्षा राख्या विना वर्तमान समये जे जेवा होय. तेने तेवो कहे. तेने सूक्ष्म ऋजुसूत्र नय कहे छे.

माटो बाह्य परीणामने जे ग्रहे. तेने स्थूल ऋजुसूत्र नय कहे छे. ए ऋजु सूत्रना बे भेद दिगंबर कहे छे.

ऋजुसूत्रं वर्तमान ग्राहकं तद् वर्तमानं नामादि चतुष्प्रकारं ग्राह्य—नय चक्र कर्त्ता ऋजुसूत्र नयमां नाम, स्थापना, द्रव्य, अने भाव ए चार निक्षेपा ग्रहण करे छे.

५ शब्दनय स्वरुपं.

जे वस्तु गुणवंत. तथा निर्गुणवंत होय. तेने नाम कही बोलावीए जे भाषा वर्गणाथी शब्दपणे गोचर थाय. ते शब्द नय. जे कारणथी अरुपी द्रव्य वचनथी ग्रह्या जाय नहीं. पण वचनथी कहेवा ते शब्दनय कहीए. अहीं जे शब्दनो अर्थ ते पणो जे वस्तुमां वस्तुपणे

पामीए. तेवारे ते वस्तु शब्द नये कहीए. जेम घटनी चेष्टाने करतो होय ते घट कहेवाय. ए शब्द नयमां व्याकरणथी नीपन्या. अने बीजा पण सर्व शब्द लीधा. आगमसार ग्रंथ कर्ता शब्दनयमां चार निक्षेपा ग्रहण करे छे.

१ पहेलो नाम निक्षे पोते आकार तथा गुणरहीत वस्तुने नाम कही बोलावे. तेने नाम निक्षेपो कहे छे. जेम एक लाकडीने लेइने कोइए तेने जीव एवुं नाम कह्युं. ते नाम जीव जाणवो. एवी रीते नाम तप, अथवा नाम सिद्ध. जेम वड प्रमुखने सिद्धवड एम कही बोलावे छे. ते नाम निक्षेपो कहीए.

जेम कोइ वस्तुमां कोइ वस्तुनो आकार देखीने तेहने ते वस्तु कहे. जेम. चित्रामण

अथवा काष्ठ पाषाण प्रमुखनी मूर्ति तेने घोडा हाथी केहेवाय ते स्थापना निक्षेपो जाणवो. ए स्थापना निक्षेपो नाम निक्षेपास होत होय. जेम स्थापना सिद्ध जिनप्रतिमा प्रमुख ते सद्भाव स्थापना पण होय, अने अ सद्भाव स्थापना पण होय अकृत्रिम जीन प्रतिमा ते नंदीश्वर द्वीप प्रमुखने विषे अने अने जे इहांनी प्रतिमा ते कृत्रिम ते सर्व स्थापना जाणवी. जेम चित्रामणनी स्त्री जहां होय तीहां साधु रहे नही. कारण के स्थापना स्त्री छे ते स्त्री तुल्य जाणवी तेमज जिन प्रतिमा जिन सरीखी जाणवी. काली दोरीने सापनी बुद्धिथी हणतां सापनी हिंसा लागे छेः तेम जीन प्रतिमाने जीननी बुद्धिए करी पुजतां मानतां

आत्महित जाणवुं.

चित्रामनी मुर्तिने हिंसाना परीणाम थकी फाडे तेने हिंसा लागे छे तेमज जीनवर ध्यान "जिन प्रतिमा पूजतां लाभ थाय छे.

जेनुं नाम पण होय तथा आकार स्थापना गुण पण होय अने लक्षण पण होय पण आत्मानो उपयोग मळे नहीं तेने द्रव्य निक्षेपो जाणवो, अज्ञानी जीव ते जीव स्वरुपना उपयोग वीना द्रव्य जीव छे. अणुवऊ गोदव्वं इति अनुयोग द्वार वचनात् वळी कह्युं छे जे सिद्धांत वांचतां पुछतां पद अक्षर मात्रा शुद्ध अर्थ करे छे. अने गुरु मुखे सद्दहे छे ते पण शुद्ध निश्चय नये पोतानी सत्ता ओलख्या विना सर्व द्रव्य निक्षेपामां छे. जे भाव

विना द्रव्यपणुं छे, ते पुण्य बंधनु कारण छे पण मोक्षनुं कारण नथी एटले जे धर्म करणीरुप कष्ट तपस्या करे छे, अने जीव अजीव पदार्थनी सत्ता ओळखी नथी. तेने भगवति सूत्रमां अव्रती तथा अपच्चखाणी कह्या छे. आ कथन जे बाह्य भावमां राचे छे अने आत्मस्वरुप जाणवा खप करता नथी तेने फटका तरीके छे. एकांत जिनवचन नथी. दान. पूजा. तप. क्रिया, सापेक्ष बुद्धिथी मोक्षनुं कारण छे. कारणे कार्य नीपजे इति.

आत्मानुं स्वरुप ओळखवाने बहु उद्यम करवो. मुनिपणुं आत्माना स्वरुप जाणवा वडे करी थाय छे जेम जेम आत्मानु स्वरुप जाणे छे, तेम तेम परभावनो त्याग थाय छे

श्री उत्तराध्ययन सूत्रमां कह्युं छे के नमुणी-रन्नवासेणं जंगलमां वसवाथी कंइ मुनिपणुं प्राप्त थतुं नथी पण नाणेणय मुणी होइ—आत्मा स्वरुपनुं जे ज्ञान ते थकी मुनि कहेवाय छे. इत्यादि द्रव्य निक्षेपानुं स्वरुप जाणवुं. विशेष गुरु गमथकी तत्व जीज्ञासुओए जाणवुं. आ वात एकांत समजवी नहिं. गुरु गमताए विशेष अधिकार जाणवो.

नाम. स्थापना, द्रव्य, ए त्रण निक्षेपा भाव विना अशुद्ध छे. नाम तथा आकार लक्षण गुण सहीत वस्तु ते भाव निक्षेपो जाणवो. उपओगोभावइतिवचनात् पूजादान शीलतप, क्रिया, ज्ञान, ए सर्व भाव निक्षेपा सहीत लाभनुं कारण छे. इहां कोइ कहेशे जे

मनना परीणाम द्रढ करीने जे करीए तेने भाव कहीए. पण एम कहेवुं ते योग्य नथी ए प्रमाणे तो सुखनी वांछाए मिथ्यात्वी पण घणा करे छे, पण सूत्रनी साखे वीतरागनी आज्ञाए हेय, तथा उपादेयनी परीक्षा करवी, अजीवतत्व, तथा आश्रवतत्व तथा बंधतत्व उपर त्याग भाव, अने जीवना स्वगुण जे संवर निर्जरा मोक्ष तत्व उपरे उपादेय परीणाम, तेने भाव कहीए, ए चार नीक्षेपा कह्या.

शब्द नयमां भावनी मुख्यता छे एम पण छे.

६ समभिरुढनय.

(६) समभिरुढ नय—जे वस्तुना केटलाक गुण प्रगटया छे अने केटलाक गुण प्र-

गटया नथी प्रण अवश्य पगटशे एहवी वस्तु-ने वस्तु कहे, ते वस्तुना नामांतर: एक करी जाणे जेम जीव चेतन आत्मा एनो एक अर्थ करी सर्दहे, तेने समभिरुढ नय कहे छे ए नय एक नय ओछी वस्तुने पुरेपुरी कहे. जेम तेरमे गुणठाणे वर्तता केवळीने सिद्ध कहे.

(७) एवं भूतनय—जे वस्तु पोताने गुणे संपुर्ण छे अने पोतानी क्रिया करे छे तेने ते वस्तु करी बोलावे. जेम मोक्ष स्थानकमां जे जीव पहोच्या तेने सिद्ध कहे. जेम पाणीथी भरेलो स्त्रीना माथा उपर आवतो जल धरण क्रिया करतो तेने घट कहे. ते एवं भूत नय जाणवो.

हवे प्रमाण बतावे छे.—प्रमाणना बे भेद

छे (१) प्रत्यक्ष प्रमाण (२) परोक्ष प्रमाण.

१ जे जीव पोताना उपयोगथी द्रव्यने जाणे, तेने प्रत्यक्ष प्रमाण कहे छे जेम केवळी छ द्रव्य प्रत्यक्षपणे जाणे छे. तथा देखे छे. ते माटे केवल ज्ञान सर्वथी प्रत्यक्ष ज्ञान छे. मनः पर्यव ज्ञान ते मनो वर्गणा प्रत्यक्ष जाणे. तथा अवधिज्ञान ते पुद्गल द्रव्यने प्रत्यक्ष जाणे. माटे ए बे ज्ञान देश प्रत्यक्ष छे.

२ मति ज्ञान अने श्रुत ज्ञाननो उपयोग ते परोक्ष प्रमाण छे.

परोक्ष प्रमाणना त्रण भेद छे.

१ अनुमान प्रमाण २ आगम प्रमाण ३ उपमान प्रमाण.

१ कोइक सहीनाण देखीने जे ज्ञान था

य. जेम यत्र यत्र धूमः तत्र तत्र अग्निः जेजे ठेकाणे धूम होय ते ते ठेकाणे आग्नि होय एटले धूमने देखीने जे अग्निनुं अनुमान थयुं ते अनुमान प्रमाण.

२ शास्त्रनी साक्षीथी जे वात जाणीए. जेम देवलोक, नरक, निगोद विगेरेनो विचार आगमथी जाणीए छीए ते आगम प्रमाण छे.

३ कोइक वस्तुनो दृष्टांत आपीने वस्तुने ओळखाववी ते उपमान प्रमाण जाणवुं.

सप्तभंगीनुं स्वरुप.

१ स्यात् कहेतां अनेकांतपणे सर्व अपेक्षा लेइने जीव द्रव्यमां आपणो द्रव्य, आपणो क्षेत्र, आपणो काल, तथा आपणो भाव,

एम स्वगुण पर्याये जीव छे तेम सर्व द्रव्य आपणे गुण पर्याय छे ते स्यात् अस्ति नामनो पहेलो भांगो जाणवो.

२ जे जीव द्रव्यमां बीजा पांच द्रव्यना द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव, ते पर द्रव्यना गुण पर्याय जीव द्रव्यमां नथी, एटले पर द्रव्यना गुणनो नास्तिपणो जीव द्रव्यमां छे ए स्यात् नास्ति नामे बीजो भांगो थयो.

३ द्रव्य स्वगुणे अस्ति अने परगुणे नास्ति ए बे भांगा एक समये द्रव्यमां छे. जे समयमां शुद्ध स्वगुणनी अस्ति छे तेज समयमां परगुणनी नास्ति पण छे यस्मिन् समये शुद्ध स्वगुण स्य अस्तिता आत्मनि तस्मिन् समये एव परगुणस्य नास्तिता आत्मानि बोध्या.

माटे अस्ति नास्ती ए बे भांगा एक समयमां भेला छे ते स्यात् अस्ति नास्ति त्रीजो भांगो थयो.

४ अस्ति अने नास्ति ए बेउ भांगा एक समयमां छे, तो वचने करी अस्ति एटलुं बोलतां असंख्याता समय लागे, तथी नास्ति भांगो तेज वखते कहेवाय नहीं, अने जो नास्ति भांगो कह्यो तो अस्तिपणो नाख्यो, माटे एकज अस्ति कहेतां थकां नास्तित्व तेज समये द्रव्यमां छे, ते कहेवाणो नहीं, माटे मृषावाद लागे, तेमज नास्ति कहेतां अस्तिनो मृषावाद लागे, माटे वचने करी अगोचर छे. एक समयमां बे भांगा वचने करी कह्या जाय नहीं. केमके एक अक्षर बोलतां असंख्याता

समय लागे छे. माटे वचनथी अगोचर छे ते स्यात् अवक्तव्य चोथो भांगो जाणवो.

५ अवक्तव्य पणो वस्तुमां अस्तित्वनो पण छे. माटे स्यात् अस्ति अवक्तव्य ए पांचमो भांगो जाणवो.

६ नास्तित्वनो अवक्तव्य पणो वस्तु मध्ये छे माटे स्यात् नास्ति अवक्तव्य ए छट्ठो भांगो जाणवो.

७ अस्तित्व तथा नास्तित्व एटले अस्तिपणुं तथा नास्तिपणुं एम बे धर्म एक समये वस्तुमां छे. पण वचन थकी कह्या जाय नही, माटे अस्ति नास्ति अवक्तव्य ए सप्तमो भांगो जाणवो.

८ सात भांगा नित्य तथा अनित्यपणा

मां पण लागे छे.

१ स्यात् नित्यम् २ स्यात् अनित्यम् ३ स्यात नित्यानित्यं ४ स्यात् अवक्तव्यं ५ स्यात् नित्यं अवक्तव्यं ६ स्यात् अनित्यं अवक्तव्यं ७ स्यात् नित्यानित्यं युगपत् अवक्तव्यं ए सात भांगा जाणवा.

तेमज एक अनेकना सात भांगा जाणवा तथा गुण पर्यायमां पण कहेवा केमके सिद्ध मध्ये नयनथी तोपण सप्तभंगी तो छे. ए सप्तभंगीमां आद्य त्रण भांग सकला देशी छे अने बाकीना चार भांगा विकला देशी छे.

त्रण दशा बतावे छे १ बाधक २ साधक ३ सिद्ध.

१ मिथ्यात्व दशा ते बाधक दशा जा-

णवी. २ समकित गुणठाणाथी मांडीने अयोगी केवळी गुणठाणा सुधी साधक दशा जाणवी. ३ सर्व कर्मथी रहीत दशा ते सिद्ध दशा जाणवी.

(१) ज्ञाननो जाणपणो ते जीवनो गुण जाणवो (२) तेनो ज्ञाता जीव (३) ज्ञेय ते सर्व द्रव्य.

(१) ध्यान ते जीवना स्वरुपनु (२) ध्याननो ध्याता जीव (३) ध्येय ते आत्मानुं स्वरुप. आत्माना त्रण भेद छे १ बहिरात्मा २ अंतरात्मा ३ परमात्मा.

१. शरीर मन लश्या इंद्रि आदि वस्तुने अज्ञानी जीव आत्म बुद्धिए करी माने ते पहेलो बहिरात्मा जाणवो. दुहा. पुद्गल मे रा-

ची रहे. पुद्गल सुखनिधान, तस लाभे लोभ्यो रहे. बहिरातम अभिधान ॥१॥ पुद्गल से न्यारो नही आतम एवी बुद्धि, बहिरातम सुख क्युं लहे, प्रगटे नहीं स्व शुद्धि ॥२॥

२ जे देह सहीत जीव छे पण निश्चय सत्ता गुण सिद्ध समान छे एटले पोताना जीवने सिद्ध करी ध्यावे ते अंतरात्मा जाणवो. एटले पुद्गल वस्तु आत्मानी नथी, आत्माथी शरीर इंद्रिय लेश्या विगेरे भिन्न छे, आत्मा अरुपी छे, पुदगल (कर्मरुप) रुपी छे, आत्मा चेतना सहीत छे, कर्म जड छे, आत्माने चार गतिमां भटकवानुं कारण कर्म छे. ते मारी वस्तु नथी. पण पर वस्तु छे अरे हुं ए पर वस्तुने पोतानी मानी बेठो छुं. अने ते

थी हुं दुःखी थाउ छु. हे चेतन तुं अरुपी अनंत गुणनो भोक्ता छे. आठ कर्मना नाशथी तुं परमात्मा (एटले) कर्म रहीत शुद्ध आत्मा स्वरुपे थइश. कर्म रहीत जेवा सिद्धना जीवो छे, तेवो तुं पणछे.कर्मना आवरणथी तारा गुण दबाइ गया छे. इत्यादी पोताना आत्माने सिद्ध समान करी ध्याववो ते अंतरात्मा कहीए.

३ सर्व कर्म खपावी केवळ ज्ञान पाम्या ते अरिहंत तथा सिद्ध सर्व परमात्मा जाणवा

हवे द्रव्य मध्ये छ सामान्य गुण कहे छे

१ अस्तित्व ते छ द्रव्य आपणा गुण पर्याय प्रदेश करी अस्ति छे तेमां धर्म अधर्म आकाश अने जीव ए चार द्रव्यना असंख्याता प्रदेश मळे खंध थाय छे अने पुद्गलमां

खंध थवानी शक्ति छे माटे ए पांच द्रव्य अस्तिकाय छे अने छठ्ठो काळ द्रव्यनो समय छे ते कोइ कोइथी मळतो नथी केमके एक समय क्षिणश्या पछी बीजो समय आवे छे माटे काल अस्तिकाय नथी ए द्रव्यमां अस्तित्व पणो कह्यो.

२ वस्तुत्व एटले छ द्रव्यमां वस्तु पणो कहे छे. ते द्रव्य एकठा एक क्षेत्र मध्ये रह्या छे एक आकाश प्रदेशमां धर्मास्तिकायनो एक प्रदेश रह्यो छे. तथा अधर्मास्तिकायनो पण एक प्रदेश रह्यो छे, आगमसारमां जीव अनंताना अनंत प्रदेश रह्या छे एम लख्युं छे. पुद्गल परमाणुआ अनंता रह्या छे. ते सर्व पोतानी सत्ता लीधा थका रह्या छे. पण कोइ द्रव्य कोइ द्रव्य

साथे मळी जता नथी. ते वस्तुपणुं जाणवुं.

३ द्रव्यत्व—कहेतां द्रव्यपणो ते सर्व द्रव्य पोत पोतानी क्रिया करे छे. धर्मास्तिकायमां चलन सहाय गुण ते सर्व प्रदेश मध्ये छे. सदा पुद्गल तथा जीवने चलण स्वभाव रुप क्रिया करे छे.

प्रश्न—लोकांतसिद्ध क्षेत्रमां धर्मास्तिकाय छे. ते सिद्धना जीवोने चलाववापणो करता नथी तेनुं केम.

उत्तर—सिद्धना जीवो अक्रिय छे. माटे चालता नथी. पण ते क्षेत्रमां सूक्ष्म निगोदना जीव तथा पुद्गल छे. तेने धर्मास्तिकाय चलन सहाय गुण आपे छे. पण सिद्धना जीवो अक्रिय छे. तेथी तेमने चलण सहाय

गुण धर्मास्तिकाय आपतो नथी. पुद्गल सक्रिय छे. पण पुद्गल संग त्यागी जे सिद्ध थया ते तो अक्रिय छे अने अक्रिय एवा सिद्धना जीवो चाली शकता नथी. जे वस्तु सक्रिय होय छे. गति करी शके छे. तेने धर्मास्तिकाय चालवामां सहाय आपे छे. पण अक्रिय एवा सिद्धना जीवो गति करता नथी. तथा तेमने चालवामां सहाय गुण धर्मास्तिकाय आपी शकतो नथी. सिद्धात्माओ अक्रिय छे. माटे धर्मास्तिकाय चलण सहाय गुण आपतो नथी: तेथी सिद्धना जीवो निश्चल स्वस्वरुपी छे.

अधर्मास्तिकाय जीव तथा पुद्गलने स्थीर राखवानी क्रिया करे छे. तथा आका-

श द्रव्य ते सर्व द्रव्यने अवगाहना गुण रुप दान आपे छे.

प्रश्न–अलोकाकाशमां बीजुं कोइ द्रव्य नथी तो अलोकाकाश कोण द्रव्यमे अवगाहना दान आपे छे.

उत्तर–अलोकाकाशमां अवगाहना दान देवानी शक्ति तो लोकाकाश जेवीज छे. पण त्यां अवगाहना दान लेनार कोइ द्रव्य नथी, माटे अवगाहना दान करतुं नथी.

पुद्गल द्रव्य मिलवा विखरवारुप क्रिया कर्या करे छे. तेथी कालद्रव्य वर्तनारुप क्रिया कर्या करे छे. अने जीव द्रव्य ज्ञानलक्षण उपयोग रुप क्रिया करे छे. ए द्रव्य पणो कह्यो.

४ प्रमेयत्वं—एटले प्रमेयपणो छ द्रव्यमां छे. तेनो प्रमाण केवली पोताना ज्ञानथी करे छे. धर्मास्तिकाय. अधर्मास्तिकाय. अने आकाश ए एकेक द्रव्य छे. अने जीव द्रव्य अनंतां छे. तेहनी गणतरी बतावे छे. संज्ञी मनुष्य संख्याता छे. असंज्ञी मनुष्य असंख्याता छे. नारकी असंख्याता छे. देवता असंख्याता छे. तिर्यंच पंचेंद्री असंख्याता छे. बेरेंद्री असंख्याता छे. तेरेंद्री असंख्याता छे. चौरेंद्री असंख्याता छे. ते थकी पृथ्वीकाय असंख्याता छे. अपकाय असंख्याता. ते उकाय असंख्याता. वायुकाय असंख्याता. प्रत्येक वनस्पति जीव असंख्याता. ते थकी सिद्धना जीव अनंता. ते थकी बादर निगो-

दना जीव अनंतगुणा बादर निगोद ते. कंद मूळ. आदु. सूरण शकरीयां मुळा. प्रमुख. एहना सूइना अग्रभाग जेटला भागमां अनंता जीव रह्या छे. ते सिद्धना जीवथी अनंत गुणा छे. अने सूक्ष्म निगोद जीव सर्वथी अनंत गुणा छे. ए सूक्ष्म निगोदनो विचार कहे छे.

लोकाकाशना जेटला प्रदेश छे. तेटला गोला छे. ते एकेक गोलामां असंख्याती निगोदछे. अनंता जीवोनुं पिंडभूत एक शरीर तेने निगोद कहेछे अने तेमांथी एकनिगोदमांअनंता जीव रह्या छे अतीत काळना सर्व समय तथा वर्तमानकाळना एक समय तथा अनागतकाळना सर्व समय. ते सर्वने भेला करीए.अने

तेने अनंत गुणा करीए तेटला एक निगोद मां जीव रह्या छे एटले एक निगोदमां अनंता जीव रह्या छे. तेमांथी एक जीव ग्रहण करीए. तेना प्रदेश असंख्याता छे अने एकेका प्रदेशे अनंति कर्मनी वर्गणा लागी छे. ते एकेक वर्गणा मध्ये अनंता पुद्गल परमाणु आ छे. एम अनंता परमाणु जीव साथे लाग्या छे. ते थकी अनंतगुणा पुद्गल परमाणु जीवथी रहीत छूटा छे.

गाथा

गोलाय असंखिज्जा असंख निगोए हवइ गोलो, इक्किकमिनिगोए अणंता जीवा गुणेयव्वा. ॥१॥

अर्थ—लोकमांहे असंख्याता गोळा छे.

एकेका गोळा मध्ये असंख्याती निगोद छे. अने एकेक निगोदमां अनंता जीव छे.

गाथा

सत्तरस समहिआ, किरइगाणु पाणमि हुति खुड्डभवा, सगतिससयति हुत्तर, पाणुं पुणइग मुहुत्तंमि.

अर्थ—निगोदीया जीव मनुष्यना एक श्वासो श्वासमां सत्तर भव झाझेरा करे छे. एक मुहूर्तमां ३७७३ त्रण हजार सातसो तोतेर श्वासो श्वास थाय छे. तेटलामां निगोदीया जीव केटला भव करे ते बतावे छे.

पणसाठिसहस्सपणसय छत्तिस्सा इग मुहुत्त खुड्डभवा, आवलियाणं दोसय, छप्पन्ना एगखुड्डभवे.

अर्थ–एक मुहूर्तमां निगोदना जीव ६५५३६ भवकरे. अने निगोदनो एक भव २५६ आवलीनो छे. क्षुल्लक भवनो ए प्रमाण छे.

गाथा–अथ्थि अणंताजीवा जेहिंनयत्तो-तसाइ परिणामो उववज्जांति चयंतिय, पुणोवि तथ्थतथ्थेव–निगोदमां अनंताजीव एहवा छेके जे जीव त्रसपणो कोइ वखते पाम्या नथी. अनंतोकाल पूर्वे गयो. अने अनंतोकाल जाशे पण ते जीव वारंवार तीहांज उपजे छे. अने चवे छे. एम एकनिगोदमां अनंताजीव छे. ते निगोदना बे भेद छे. १ एक व्यवहार राशिनिगोद, अने बीजो अव्यवहार राशिनिगोद, तेमां जे बादर एकेंद्रीपणो भा-

बे त्रसपणो पामीने पाछा निगोदमां जाइ पडया छे. ते निगोदीया जीवने व्यवहार राशिया कहीए. अने जे जीव कोइपण काळे निगोदमांथी नीकळ्या नथी. ते जीव अव्यवहार राशिया कहीए.

इहां मनुष्यपणामांथी जेटला जीव कर्म खपावीने मोक्षे जाय छे. तेटला जीव तेज समये अव्यवहार राशि सूक्ष्म निगोदमांथी नीकळीने उचा आवे छे. जो दशजीव मोक्षे जाय तो दशजीव नीकळे. कोइक वेळाए भव्यजीव ओछा नीकळे तो एक बे अभव्य नीकळे पण व्यवहार राशिमां कोइ जीव वधेघटे नहीं. एवा निगोदना असंख्याता गोळालोक मांहे छे.

छदिशिना आव्या पुद्गलने आहारपणे जे लेछे. ते सकलगोला कहेवाय छे. अने लोकांतना प्रदेश जे निगोदना गोला रह्या छे, तेने त्रण दिशिना आहारनी स्पर्शना छे माटे ते विकल गोला कहेवाय छे. ए सूक्ष्म निगोदमां अनंतु दुःख छे. तेनु उदाहरण बतावे छे. सातमी नरकनु आउखुं तेत्रीस सागरोपमनुं छे. अने ते तेत्रीश सागरोपमना जेटला समय थाय तेटला वखत सातमी नरकमां तेत्रीस सागरोपमने आउखे कोइ जीव उपजे तेटला भवमां ते जीवने जेटलुं छेदन भेदननुं दुःख थाय ते सर्व एकठुं करीए तेथी अनंतगुण दुःख निगोदीया जीवने एक समयमां थाय छे. जेम कोइ देवता

साडात्रणक्रोड लोढानी सोयो तपावीने एक दम कोइ मनुष्यना शरीरे चोंपे तेथी तेने जे वेदना थांय तेथी अनंतगुणी वेदना निगोदीया जीवने एक समयमां छे. भव्य जीवने निगोद प्राप्त थवानुं कारण अज्ञान छे. माटे तेहनो त्याग करवो ए सर्व प्रमेयनो प्रमाता आत्मा ते पोताना ज्ञान गुणे करी प्रमेयनो प्रमाण करे छे. ए प्रमेयत्वपणो कह्यो.

८. सत्व कहेतां सत्वपणो ते छ ए द्रव्य एक समयमां उपजे छे, वीणसे छे, अने स्थिरपणे छे. उत्पादव्यय, अने ध्रुवपणो तेही ज सत्पणो छे. उत्पाद्, व्यय, ध्रुव युक्त–सत् इति तत्वार्थ वचनात् तेने विस्तारथी बतावे छे.

धर्मास्तिकायना असंख्याता प्रदेश छे

तीहां एक प्रदेशमां अगुरु लघु असंख्याता छे, अने बीजा प्रदेशमां अगुरु लघु अनंता छे. त्रीजा प्रदेशमां संख्या तो अगुरु लघु छे एम असंख्याता प्रदेशमां अगुरु लघु पर्याय घटतो वधतो रहे छे, ते अगुरु लघु पर्यायचल छे. ते जे प्रदेशमां असंख्याता छे तेज प्रदेशमां अनंतो थाय छे अने अनंताने ठेकाणे असंख्याता थाय छे. अने असंख्याताने ठेकाणे संख्यातो अगुरु लघु पर्याय थाय छे. एम लोक प्रमाण असंख्यात प्रदेशमां सरीखो समकाले अगुरु लघु पर्याय फरे छे. जे प्रदेशमां असंख्याता फरीने अनंतो थाय छे. ते प्रदेशमां असंख्यातापणानो विनाश छे. अने अनंतापणानो उपजवो एटले

उत्पाद छे. अने अगुरु लघुपणे गुण ध्रुवछे. एम उपजवो. विणसवो. अने ध्रुव ए त्रण परिणाम छे. तेने उत्पाद, व्यय, अने ध्रुव कहे छे.

अधर्मास्तिकायमां उत्पाद, व्यय, अने ध्रुवरुप त्रणे परिणाम असंख्याता प्रदेशे सदा समय समयमां परिणमी रह्या छे. तेमां पण उपजे वीणसे अने स्थिर रहे छे.

आकाशना प्रदेशमां पण एक समय त्रण परिमाण परिणमी रह्या छे अने जीवना असंख्याता प्रदेश छे. तेमां पण उत्पाद, व्यय, अने ध्रुव, ए त्रण परिणाम परिणमे छे तथा पुद्गल परमाणुआमां पण सदा समय समय, उत्पाद, व्यय, अने ध्रुव, ए त्रण प-

रिणाम परिणमी रह्या छे कालनो वर्तमान समय मटीने अतीतकाल थाय छे, तो ते समयमां वर्तमानपणानो विनाश छे, अने अतीतपणानो उपजवो छे, तथा काळपणे ध्रुव छे, ए स्थूल थकी उत्पाद व्यय अने ध्रुवपणो कह्यो अने वस्तुपणे मुलपणे ज्ञेयने पलटवे ज्ञाननो पण ते भासनपणे परिणमवो थाय. ते पूर्वपर्यायना भासननो व्यय, अने अभिनवज्ञेय पर्यायना भासननो उत्पाद, तथा ज्ञानपणानो ध्रुव, ए रीते सर्वगुणना धर्मनी प्रवृत्तिरुप पर्यायनो उत्पाद. व्यय श्री सिद्ध भगवंतमां पण थइ रह्यो छे.

एमज धर्मास्तिकायना प्रदेशे जेक्षेत्रगत असंख्याता पुद्‌गल तथा जीवने पहेले समये

चलण सहायीपणो परिणमतो हतो. अने बी-
जे समय अनंतपरमाणु तथा अनंतजीव प्रदे-
शने चलणसहायी थयो. तेवारे असंख्याता
चलणसहायनो व्यय, अने अनंता चलणस-
हायनो उपजवो, अने गुणपणे ध्रुव, एम धर्म
द्रव्यमध्ये उत्पाद, व्यय, अने ध्रुवपणो थइ
रह्यो छे. ते प्रमाण अधर्म आकाशादि द्रव्यने
विषे जाणवुं तथा वली कार्य कारणपणे उ-
त्पाद. व्यय तथा अगुरु लघुना चलननो उ-
त्पाद, व्यय, पंचास्तिकायने विषे कहेवो त-
था कालद्रव्यने उपचारथी द्रव्य छे. तेनुं स-
र्व स्वरुप उपचारथीज कहेवुं. ए रीते सर्व द्र-
व्यमां सत्पणो छे. जो अगुरु लघुनो भेद न
थाय तो प्रदेशोनो मांहोमांहे भेद कहेवो थाय?

ते माटे अगुरु लघुना भेद सर्वमां छे.

अगुरु लघुपणो कहे छे.

जे द्रव्यनो अगुरु लघु पर्याय छे. ते छ प्रकारनी हानि वृद्धि करे छे.

१ अनंतभाग वृद्धि. २ असंख्यातभाग वृद्धि ३ संख्यातभाग वृद्धि. ४ संख्यातगुण वृद्धि. ५ असंख्यातगुण वृद्धि. ६ अनंतगुण वृद्धि.

ए छ प्रकारनी वृद्धि कही. हवे छ प्रकारनी हानि बतावे छे.

१ अनंतभाग हानि. २ असंख्यातभाग हानि. ३ संख्यातभाग हानि. ४ संख्यातगुण हानि. ५ असंख्यातगुण हानि. ६ अनंतगुण हानि.

ए छ प्रकारनी हानि समजवी.

ए छ प्रकारनी हानि तथा वृद्धि. सर्व द्रव्यमां सदा समय समये थइ रही छे. वृद्धि कहेतां उपजवो (उत्पाद) अने हानि कहेतां (व्यय) कहीए. ए अगुरु लघुत्व कह्युं. अगुरु लघु गुणने गोत्रकर्म रोके छे. ए अगुरु लघु स्वभाव सदा समय समय सर्व द्रव्यमां छे.

छ ए द्रव्यमां जेटला सरखा गुण छे. तेने सामान्य गुण कहे छे.

जे गुण एक द्रव्यमां छे. ते गुण बीजा द्रव्यमां नथी. तेने विशेष गुण कहे छे.

जे गुण कोइक द्रव्यमां छे, अने कोइक द्रव्यमां नथी. तेने साधारण असाधारण गु-

ण कहे छे.

छ ए द्रव्यमां अनंतगुण, अनंतपर्याय, अने अनंतस्वभाव सदा शाश्वता छे. जेवी रीते श्री केवली महाराजे प्ररूप्या. ते सर्व जे रीते छे ते रीते शुद्ध सद्दहणापूर्वक यथार्थ उपयोगथी श्रुतज्ञानादिकथी यथार्थपणे जाणवा. सद्दहवा ए निश्चयज्ञान ते मोक्षप्राप्तिनुं कारणीभूत छे. जे जीव ज्ञान पाम्यो. ते जीव विरति करे छे. ते चारित्र जाणवुं. ज्ञाननुं फळ विरतिपणुं छे. ते मोक्षनुं कारण छे.

४ चारध्यान.

१ आर्तध्यान २ रौद्रध्यान ३ धर्मध्यान ४ शुक्लध्यान.

१ आर्तध्यान अने २ रौद्रध्यान ए बे

दुर्गतिहेतुभूत छे. ए बे ध्यान अशुभ छे. भव्य प्राणीयोने ए बे ध्यान त्याग करवा योग्य छे. धर्मध्यान अने शुक्लध्यान ए बे शुद्ध उपास्य छे.

मनमां आहट्ट दोहट्टना परिणाम ते आर्तध्यान कहीए आर्तध्यानना चार पाया छे.

आर्तध्यानना ४ पायाः १ इष्टवियोग २ अनिष्टसंयोग ३ रोगचिंता ४ अग्रशौच.

१ इष्टवियोग—पौद्गलिक वस्तु जे मनने आल्हादकारी तेनो पोताथी वियोग थवाथी जेजे आहट्ट दोहट्टना परिणाम ते इष्टवियोगनाम आर्तध्यान कहीए, भाइ, मित्र, सज्जन, माता, पीता, स्त्री, पुत्र. धन, प्रमुख इष्ट वस्तुना वियोग थवाथी विलाप करे.

ते इष्ट वियोगनुं लक्षण छे.

२ अनिष्टसंयोग—अनिष्ट एटले दुःखनां कारणभूत, शत्रु, दरिद्रिपणुं. तथा, कुभार्या, कुभोजन, कुपुत्र, आदिनो संयोग एटले संबंध थयो ते थकी मनमां जे दुःख चिंता उपजे ते अनिष्ट संयोग नाम बीजो पायो आर्तध्याननो जणवो.

३ रोगचिंता—शरीरमां अनेक प्रकारना रोगो रह्या छे. मनुष्यना शरीरमां साडा त्रणकोड राम राजा छे एकेका रोममां पोणा बबे रोग रह्या छे. तेमांथी केटलाक रोगो उदये आवे छते. चिंता करे. हाय, हाय, हुं हवे शी रीते जीवी शकीश. अरे माराथी आवुं दुःख खमातुं नथी. अरे हुं मरी जाऊं

छुं. अरे जो पहेलांथी मे दवाओ करावी राखी होततो आ वखते खावाथी मारो रोग मटी जात. अरे हुं हवे दुःख सहन कर्या करतां मरी जाऊतो सारुं. अरे कोइ सारावैद्यने बोलावी मारा रोगनी शांति थाय. तेम करुं. आवा प्रकारनी रोग संबंधथी जे चिंता करवी. ते रोगचिंता नामनो त्रीजो पायो अर्तध्याननो जाणवो.

४ अग्रशौच—अग्र एटले आगल भाविष्यकाल संबंधी शौच—एटले विचार, चिंतवन, शोच करवो ते अग्रशौच कहीए. जो-आ वर्षमां अमुक काम करशुं तो आवता वर्षमां अमुक लाभ थशे. दान, शीयल, तप विगेरेनुं फल मागे के जे मे तप, दान, शी-

पल पाल्युं होय तो आवता भवमां देवता थाऊ, या अमुक थाउ, चक्रवार्तिथाउ, राजा-थाउ, अमुकनो नाश करनार थाऊ, एवी आगला भवनी जे वांछा. ते अग्रशोच क-हीए.

आर्तध्यायना चार पाया थकी जीव ति-र्यंचनी गतिमां जाय छे. माटे भव्य प्राणी-योए ए ध्यान थकी दूर रहेवुं, आर्तध्यान रूप शत्रुनो मनमां वास करवा देवाथी आ-त्मानी अनंतिरिद्धिनो नाश थाय छे. आ आत्मा अनंतोकाळ ए आर्तध्यानथी रजळ्यो अने हजी जो एनो संग नहीं मूके तो घणा भव भटकशे. जे आर्तध्यानने शत्रुरुप जा-णे छे. ते तेनाथी दुर रहेवा अंतःकरणथी म-

हेनत करेछे संसारमां भूंडनी पेठे राच्या पच्या थका दुर्ध्यान ध्यावे छे. ते पामरो अधोगतिने सेवे छे. संसारमां कोइ कोइनुं नथी. चेतन परने जड वस्तु तेने पोतानी मानी अनंता दुःख भोगवे छे. खरो शत्रु दुर्ध्यान छेः ए दुर्ध्याने प्रसन्न चंद्रराज रुषिने सातमी नर्कनां दलीयां संचाव्यां. (एकठां कराव्यां) पण धर्मध्यान रुपी योद्धाए आवी दुर्ध्यानने हठावी, मोक्षरुप स्त्रीनो मेळाप करावी आप्यो आश्चर्य मने एटलुंज थाय छे के जीव जेते हित तथा अहितने जाणे छे. छतां अहितमां वर्ते छे, निर्ग्रंथ महात्माओ हृदयरुप महेलमां चंडाल सरखा आर्तध्यानने प्रवेश करवा दे-

ता नथी. आत्महितैषीयोए. हुं कोणछुं. क्यांथी आव्यो. क्यां जाइश. तारु कोण. तुं कोण. ए वाक्यनो उपयोग पूर्वक विचार करी त्याज्य वस्तुनो त्याग करवो. एज हित- कारक छे. बारंवार आ मनुष्यजन्म पामवो दुर्लभ छे. हवे जो धर्म सामग्री पामी प्रमाद करशे तो घणा भव भटकशो. अघोर दुःख- मांथी छूटवानो अवसर उत्तम छे. एम ज्ञा- नीओ दयाथी पुस्तक द्वारा जणावे छे.

आर्तध्याननना परिणाम पांचमा तथा छ- ठ्ठा गुणठाणा सुधी होय छे. कारण के छठुं गुणठाणुं प्रमत्त छे, माटे तीहां ए ध्याननो प- रिणाम संभवे छे.

२ रौद्राध्यानना ४ पाया.

१ हिंसानुबंधीरौद्रध्यान २ मृषानुबंधीरौद्रध्यान ३ अदत्तानुबंधीरौद्रध्यान ४ परिग्रहानुबंधीरौद्रध्यान.

१ हिंसा करीने हर्ष पामे. बीजो कोइ हिंसा करतो होय तेने देखी खुश थाय. अथवा युद्धनी अनुमोदना (प्रशंसा) करे. ते हिंसानुबंधीरौद्रध्यान जाणवुं.

२ जुठुं बोली मनमां हर्ष पामे अहो में केवुं कपट कर्युं के—मारा जुठापणानी कोइने खबर पडी नहीं एवो मृषावादरुप परिणाम ते मृषानुबंधीरौद्रध्यान कहेवाय छे.

३ चोरी करी. ठगाइ करी. मनमां रा-

जी थाय. अने चिंतवे जे मारा जेवो कोण वळवान छे, के जे पारको माल खाय छे. चोरोने चोरी करवामां साहाय आपवाना परिणाम अने चोरी करनारनी प्रशंसारुप परिणाम ते अदत्तानुवंधीरौद्रध्यान कहीए.

४ घन, धान्य, खेत्र, वस्तु, आदि नव जातनो परिग्रह वधारवानी घणी तृष्णा होय. ने तेनी वृद्धिना ऊपायोनुं चिंतवन, कुटुंबना माटे गमे तेवुं पाप करे. वा घणो परिग्रह मळवाथी अहंकार करे, अने जगत्‌ने तृणवत् माने परिग्रह रक्षण करवानी चिंता ए आदि जे परिणामने परिग्रहानुवंधीरौद्रध्यान कहीए;

ए चार प्रकारना ध्यान थकी जीव न-

रकनी गतिमां जाय छे. माटे भव्यात्माओए चार प्रकारनुं रौद्र ध्यान ध्यावुं नहीं. महा रौरव भयंकर दुःखनुं कारण रौद्रध्यान छे. रौद्रध्यान पांचमा गुणठाणा सुधी छे. छट्ठे गुणठाणे पण एक हिंसानुबंधी रौद्रध्यानना परिणाम कोइक जीवने होय छे. रौद्रध्यान रुप सर्प जेने करडे छे, तेने चतुर्गतिरुप भव भ्रमण करवुं पडे छे. जेम सर्पनो भय लागे छे, तेम वैरागीओने रौद्रध्यानरुप सर्पनो भय लागे छे. मंत्रवडे मंत्रवादीओ जेम सर्पनुं झेर उतारे छे तेम धर्मध्यानरुप मंत्रवडे वैरागीयो पापरुप झेर उतारे छे. सर्प जेम अनिष्ट लागे छ तेम ज्ञानीओने रौद्रध्यानरुप सर्प अनिष्ट लागे छे. जनसमुह सर्पने पासे आववा

देतो नथी, तेम ज्ञानी समुह रौद्रध्यानरुप सर्पने पासे आववा देतो नथी. एटलुं विशेष छे के. सर्पडंसथी एकवार मरवुं पडे छे पण रौद्रध्यानरूप सर्पडंसथी अनंतिवार मरण करवुं पडे छे. रौद्रध्यान अघोर रात्री समान छे. अघोर अंधारी रात्रीमां जेम माणस अंध बनी जाय छे. तेम माणस रौद्रध्यानरूप अंधारी अघोर रात्रीमां अज्ञानी बनी जाय छे. अघोर रात्रीमां जेम चोरोनो प्रचार थाय छे, अने खातर पाडे छे. तेम रौद्रध्यानरुपी अघार रात्रीमां राग, द्वेष, मोह, माया अदेखाइ, निंदा, क्लेश, चाडी, असत्यरुपी चोरो, आत्मानी अनंतिरिद्धि लुंटे छे. वळी रौद्रध्यान मदिरा समान बेभान कर्ता छे. अ-

नंत दुःखनो हेतु भूत छे. हे चेतन तुं आपो
आप विचार के रौद्रध्यानरुप शत्रु तने हित-
कर्ता छे के अहित कर्ता छे; हितकर्ता तो क-
दापिकाले कही शकाय नहीं. अने अहित
करनार तो प्रत्यक्ष देखवामां आवे छे छतां
तुं केम तेनो संग छोडतो नथी. शुं तने कंइ
पैसा बेसे छे ना तेम पण नथी. द्रढ प्रहारी
जेवा हिंसके पण ए शत्रुनो संग त्याग कर्यो
त्यारे सुख पाम्या. वळी विचार के ए रौद्र-
ध्यानरुप शत्रुना वशमां पडेलो मम्मण शेठ. त-
था संभूम चक्रवर्ति नरकनां महा रौरव दुःख
भोगवे छे. तेम छतां केम तुं कंइपण मनमां
विचार करतो नथी. सूर्यने तथा चंद्रने जेम
राहु घेरे छे. तेम तने रौद्रध्यानरुप राहु ग्र-

हण करे छे. कोयला जेम खावाथी कालुं मुख थाय छे, तेम रौद्रध्यानथी समजवुं. लाखो शत्रुओने जीतनार पण रौद्रध्यानरुप शत्रने जीती शकता नथी, एवुं अशुभ, आत्मघाती, मलीन, रौद्रध्यान छे. एनो खंत पूर्वक त्याग करवो. एज हितकारक छे ए बे ध्याननो त्याग करवो. त्यारे कोनो स्वीकार करवो तेवी आकांक्षा थतां धर्म ध्याननो स्वीकार करवो एम शास्त्रकार जणावे छे.

३ धर्मध्यानना ४ पाया.

दुर्गतिपडता प्राणीयोने धारण करी राखे अर्थात् दुर्गतिमां पडवा दे नहीं. तेने सामान्य प्रकारे धर्म कहे छे.

१. आज्ञाविचय २ अपायविचय ३ विपाकविचय ४ संस्थानविचय ए चार पाया धर्मध्यानना छे.

१ आज्ञाविचय धर्मध्यान कहे छे. वीतराग देवनी आज्ञा साची करी सद्दहे भगवंते छ द्रव्यनुं स्वरुप नय प्रमाणे निक्षेपा सहित सिद्ध स्वरुप तथा निगोद स्वरुप जेवी रीते कह्युं छे, तेवी रीते हृदयमां धारे, यथा तथ्य करी माने. सद्दहे वीतरागनी आज्ञा नित्यानित्यपणे तथा. निश्चय व्यवहारपणे माने. श्रद्धा करे. तथा उत्सर्ग अपवादपणे माने, श्रद्धा करे, ते आज्ञा प्रमाणे यथार्थ उपयोग भासन थयो. तेना हर्षथी ते उपयोग मध्ये, निराधार, भासन, रमण, अनुभवता, एकता, तेमां तन्मयपणो

ते आज्ञा विचय धर्मध्यान कहीए.

२ अपायविचय—जीवमां अशुद्धपणाथी कर्मनां संयोगे करी संसारी अवस्थामां अनेक प्रकारनां अपाय कहेतां दूषण छे. ते अज्ञान, राग, द्वेष, कषाय, आश्रव, मारा नथी. तेना थकी हुं अनंताकाल रझळ्यो. अने अनेक प्रकारनी आकृतिने धारण करी. चारगतिमां भम्या करुंछुं. ते अज्ञान, राग, द्वेष, मारो घात कर्ता छे. ते मारा थकी भिन्न छे. हुं ते थकी जुदोछुं. अनंतज्ञान, अनंत दर्शन अनंत चारित्र अनंत वीर्यमयीछुं. शुद्ध, बुद्ध, अविनाशीछुं, अज, अनादि, अनंत, अक्षय, अक्षर, अनक्षर, अचल, अकल, अमल, अगम्य, अनामी, अबंधक, अकर्मी, अरुपी,

अछेदी, अभेदी, अवेदी, अलेशी, अयोगी, अभोगी, अरोगी, अकषाइ, अखेदी, अश-रीरी, अणाहारी, अव्याबाध, अनवगाही, अगुरु, लघु, परिणामी, अयोनी, अप्राणी, अतींद्रिय, अमर, अपर, अपरंपर, अव्यापी, अनाश्रित, अकंप, अविरुद्ध, अशोकी, अ-संगी, लोकालोकज्ञायक, शुद्ध चिदानंद-मय मारो आत्मा छे. एवो एकाग्रतारूप जे ध्यान, ते अपायविचय धर्मध्यान जाणवुं.

३ विपाकविचय धर्मध्यानस्वरूप—पूर्वो-क्त विशेषण युक्त मारो जीव छे. पण अना-दिकालथी कर्मनो संबंध आत्मानी साथे लो लीभूतपणे छे. तथा आ जीव अनंतां दुःख भोगवे छे. कर्मवशे आ जीव दुःखी छे. ते

कर्मनो विपाक चिंतवे जे—जीवनो ज्ञानगुणते ज्ञानावरणीय कर्म दाब्यो छे, जीवनो दर्शन गुण ते दर्शना वरणीय कर्म दाब्यो छे. जीवनो अव्यावाध गुण ते वेदनी कर्म रोक्यो छे. जीवनो क्षायक गुण ते मोहनी कर्म रोक्यो छे. जीवनो अक्षयस्थितिरुप जे गुणते आयुष्य कर्मे दाब्यो छे. जीवनो अरुपी गुण ते नामकर्मे दाब्यो छे. जीवनो अगुरु लघु गुणते गोत्र कर्मे दाब्यो छे. अने जीवनो अनंत वीर्य गुण ते अंतराय कर्मे रोक्यो छे. एम आत्माना आठ गुण ते आठ कर्मे रोक्या छे. आ संसारमां भमतां थकां जे जीवने सुख दुःख छे ते कर्मे करी छे माटे सुखपौद्गलिक उत्पन्न थये छते खुशी थवुं नहीं,

ने दुःख आवे छो शोक करवो नहीं. कर्म
वरूपनी प्रकृति, स्थिति, रस, अने प्रदेश-
ो बंध, ऊदय, उदीरणा, तथा सत्ता चिं-
ववानो जे एकाग्रतारुप परिणाम ते विपा-
ःविचय धर्मध्यान कहीए.

४ संस्थानविचय—चौदराजलोकनो स्व-
प विचारे आ लोकने चउदराज प्रमाण ऊ-
ो छे ते मध्ये सातराज अधोलोक छे. नच-
ां अढारसो जोजन मनुष्य क्षेत्र तीर्छो लो-
; छे. ते उपर कंइक उणु सातराज ऊर्ध्वलो-
; छे. तेमां सर्व वैमानिक देवता वसे छे.
ाने ते ऊपर सिद्ध शिला छे. अने तेनी ऊ-
र एक जोजनना चोवीस भाग करी-
: तेमांना त्रेवीसभाग नीचे मूकी उपरना

चोवीसमा भागे सिद्ध क्षेत्र छे. ए रीते लोकनुं प्रमाण छे. ए लोकनुं संस्थान वैशाख छे. अनंतकाल आजीवे संसारमां भमतां सर्व लोकने जन्ममरणे करी स्पर्श्यो छे. एवुं जे लोकनुं स्वरुप चिंतववुं. तथा लोकमां रहेला. धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय आदि पंचास्तिकायनुं अवस्थान तथा परिणमन द्रव्य मध्ये. गुणपर्यायनुं अवस्थान तथा द्रव्य मध्ये रहेला उत्पाद, व्यय, अने ध्रुवनुं सत्पणुं तेनो जे एकाग्रताए तन्मय चिंतवन परिणाम एवुं जे ध्याननें संस्थान विचय धर्मध्यान कहीए.

आ आरामां भव्य प्राणीयोने धर्मध्याननो आधार विशेष छे. माटे तेने विषे तत्प-

र थवुं ते सुखकारी छे धर्मध्यान चोथा गुणठाणाथी मांडीने सातमा गुणठाणा सुधी होय छे.

शुक्लध्यानना ४ पाया.

शुक्ल कहेतां निर्मळशुद्ध परआलंबन विना आत्माना स्वरुपने तन्मय पणे ध्यावे तेने शुकल ध्यान कहे छे. तेना पाया ४ चार छे.

१ पृथकत्व वितर्क सप्रविचार (२) एकत्व वितर्क अप्रविचार (३) सूक्ष्म क्रिया अप्रातिपाति (४) ऊच्छिन्न क्रियानुं वृति ए चार पाया छे.

१ प्रथकत्व वितर्क सप्रविचार—पृथ-

क्त्व—केहतां जीवथी अजीव जुदा करवा स्व भाव तथा विभावनी जुदी प्रथक पणे वेहेंचण करवी। स्वरुपने विषे पण द्रव्य तथा पर्यायनो प्र थकत्व एटले जुदा पणे ध्यान करी पर्यायते गु णमां संक्रमावे, अने गुण ते पर्यायमां सक्र- मावे ए रीते स्वधर्मने विषे धर्मांतर भेद ते प्रथक्त्व कहीए अने तेनो वितर्क ते जे श्रुत- ज्ञाने स्थित उपयोग अने सप्र विचार ते सविकल्प उपयोग एटले एक चिंतव्या पछी बीजो चिंतववो तेने विचार कहीए. एटले निर्मल विकल्प सहीत पोतानी सत्ताने ध्यावे, ते प्रथक्त्व वितर्क सप्र विचार पेहेलो पायो जाणवो ए पेहेलो पायो आठमाथी अ- गीयारमा गुण ठाणा सुधी होय छे.

२ एकत्व वितर्क अप्र विचार—जे जीव आपणा आत्माना गुण पर्यायनी एकता करी ध्यावे, ते आवी रीते के—जीवना गुणपर्याय अने जीव ते एकज छे अने मारो जीव सिद्ध स्वरुप एकज छे एवो एकत्व स्वरुप तन्मयपणे अनंता आत्म धर्मनो एकत्वपणे ध्यान वितर्क कहेतां श्रुतज्ञानना लंबीपणे अने अप्रविचार कहेतां विकल्प रहित दर्शनज्ञानेनो समयांतरे कारणता विना रत्नत्रयीनो एक समयी कारण कार्यतापणे जे ध्यान वीर्य उपयोगनी एकाग्रता ते एकत्व वितर्क अप्रविचार जाणवो ए बीजो पायो बारमा गुणठाणे ध्यावे. ए बेउ पायामां श्रुतज्ञानालंबीपणो छे, पण अवधि मनःपर्यव ज्ञानो प-

योगे वर्ततो जीव कोइ ध्यान करी शके नही. ए बे ज्ञान परानुयायी छे माटे ए ध्यानथी घनघातीयां चार कर्म खपावे. निर्मळ केवळ-ज्ञान पामे. पछी तेरमे गुणठाणे ध्याने तरीकापणे छे. तेरमाने अंते अने चऊदमे गुण-ठाणे ए बे पाया ध्यावे.

३ सूक्ष्म क्रिया अप्रतिपाति—सूक्ष्म मन वचन कायाना योगरुंधे. शैलेशी करण करी अयोगी थाय. ते जे अप्रतिपाति निर्मळ वीर्य अचलतारूप परिणाम ते सूक्ष्म क्रिया अप्रतिपाति ध्यान जाणवुं. इहां सत्ताए ८५ प्रकृति रही हती तेमांथी ७२ खपावे.

४ व्युच्छिन्न क्रियानुवृत्ति—जे योगरुंधन कीधा पछी तेर प्रकृति खपावे. अकर्मी थाय,

सर्व क्रियाथी रहीत थाय ते समुछिन्न क्रिया-यानु वृत्ति शुकल ध्यान कहीए. ए ध्यान ध्यावतां शेष दलखरण रुप क्रिया ऊछेदे. अवगाहना देहमानमांथी त्रीजो भाग घटाडे, शरीरनो त्याग करी इहांथी सातराज ऊपर लोकने अंते जइ सिद्ध थाय छे.

हवे वळी बीजा चार ध्यान कहेछे (१) पदस्थ (२) पिंडस्थ (३) रुपस्थ (४) रुपातीत.

१ अरिहंत सिद्ध आचार्य ऊपाध्याय साधु ए पंच परमेष्टीना गुणने संभारे, तेनुं हृदयमां ध्यान करे ते पदस्थ ध्यान कहीए.

२ शरीरमां रह्यो जे आपणो जीव तेमां अरिहंत सिद्ध आचार्य ऊपाध्याय साधुप-

णाना सर्व गुण छे एहवुं जे ध्यान ते पिंडस्थ ध्यान कहीए. अथवा गुणीना गुणमध्ये एकत्वता उपयोग करवो ते पिंडस्थ ध्यान.

३ रुपमां रह्यो थको पण मारो आत्मा अरुपी अनंतगुणी छे जे वस्तुनो स्वरुप अतिशयावलंबी थया पछी आत्मानुं स्वरुप एकतापणुं एहवुं जे ध्यान तेने रुपस्थ ध्यान ककहीए. ए त्रण ध्यान धर्म ध्यानमां गणवां.

४ निराकारानिः संगीः निर्मल, संकल्प विकल्प रहित, अभेद, एक शुद्ध, सत्तारूप, चिदानंद, असंग, अखंड, अनंतगुण पर्याय रुप आत्म स्वरुपनुं ध्यान, ते रुपातीत ध्यान जाणवुं. अहीयां मार्गणा गुणठाणां नय प्रमाण मति आदिक ज्ञान क्षयोपशम

भाव सर्व त्याग करवा योग्य थाय छे. ए रुपातीत ध्यान कह्युं विशेष चार ध्याननुं स्वरुप योग शास्त्र आदिथी जाणवुं.

त्रीजुं धर्म ध्यान तेनी चार भावना कहे छे.

(१) मैत्री भावना (२) प्रमोद भावना (३) कारुण्य भावना (४) माध्यस्थ भावना.

१ मैत्री भावना—सर्व जीव साथे मित्रता चिंतववी कोइ जीव मारो दुश्मन नथी. सर्वे जीवना आत्मा सिद्ध समान सत्ताए छे, अने कर्मनावशथी संसारमां सुखी दुःखी देखाय छे, ते सर्व जीव मारा सजातिय भाइ छे. एकेंद्रीआदिथी पंचेंद्री पर्यंत सर्व जीव

सजातिय छे ते मारा बांधव छे. मित्र छे. तो तेमना ऊपर मारे द्वेष करवो नहीं तेमनुं भलुं चितववुं. मारु खराब करवाने कोइ समर्थ नथी. कर्मनोज ए प्रपंच छे, कर्म ए जड वस्तु छे. अचेतन छे, रुपी छे; कर्म वस्तु विजातीय छे, ए थकी मारे दूर रहेवुं जोइए अने एना प्रपंचमां फसावुं मारे योग्य नथी. अनादिकालथी ए कर्म जड वस्तु मने चार गतिमां भटकावे छे. अने मारु पोतानु स्वरुप ओळखावववा देती नथी. जेम दारु सारा माणसने पण बेभान बनावी दे छे. अने तेना गुणनो नाश करे छे. तेम कर्म वस्तुए मारा गुणनो नाश कर्यो छे.

जेम कोइ पांच मित्रो हळीमळने दररोज

एकठा रहे छे अने एक बीजा साथे सारी रीते मित्रताइ राखे छे. परस्पर भलु वांछे छे. एक दीवसे पांच मित्रोए दारु पीधो, ते दारुनी नीशा खुब चढी, त्यारे, ते अरस्परस गाळो देवा लाग्या. अने एक बीजाने मारवा लाग्या, तेमां ए सर्व प्रपंचनु कारण दारु छे, हवे ज्यारे ए दारुनो नीशो उतरी गयो त्यारे ते एक बीजा साथे हळीमळीने वातो करवा लाग्या, अने मित्रपणे वर्तवा लाग्या. तेम कर्मरुपी दारुना जुस्साथी सर्व जीवो एक बीजाने शत्रु दुश्मन भाइ बेन वगेरे प्रपंच तरीके माने छे, पण तेमां जीवोनो कांइ वांक नथी. ए सर्व कर्मनुं फळ छे. अने कर्मे करी जीव बीजा जीवने दुश्मन तरीके धारे छे.

पण तेमां कांइ जीव कोइनो दुश्मन नथी. कर्म थकी रहीत थएला सिद्ध महाराजनुं कोइ खराब करवा समर्थ नथी तेम हुं पण ज्यारे कर्म रहीत थइश, त्यारे कोइ मारु खराब करी शकवा समर्थ नथी, कर्म तेज दुःख कारी छे.

कूतराने कोइ माणस कांकरो मारेतो ते कांकराने करडवा दोडे छे. सिंहने कोइ माणस गोळी मारेतो ते गोळी तरफ नहीं जतां ए गोळी कोणे मारी एमलक्षी मारनार सामो दोडे छे. तेम केटलाक प्राणी कूतरा अने केटलाक सिंहना जेवा होय छे. कोइ माणसे कंइ तेनुं बगाडयुं होयतो ते माणसे मारु बगाडयुं. अरे ए मारो शत्रु छे. अरे

ए मारो वैरी छे. एम धारी तेनुं भूडुं करवा तत्पर थाय छे. अने द्वेष करे छे. पण वीचारतो नथी के जो मारे शुभकर्मनो उदय वर्ततो होततो ते मारु भूडुं शीरीते करवाने समर्थ थात. पण हाल माठाकर्मनो विपाक उदये आव्यो छे. तेथी ते निमित्त कारणभूत थयो छे. पण तेमां कंइ तेनो दोष नथी. ए अशुभ कर्म में कर्या छे. माटे तेनो ए दोष छे. माटे हे चेतन तु कर्मबंध रहीत था. अने कर्मनी जाळमां फसाइश नहीं. जेटलां कर्म कर्यां छे. तेटलां भोगववां पडशे तो तु बीजा माणस ऊपर द्वेष शाकारण करे छे. ए तारो मित्र छे. तारु बगाडवा ए समर्थ नथी, एम भावना भावे.

सिंह जेम गोळी मारनार तरफ नहीं दोडतां गोळी मारनार कोण छे, एम विचारी मारनार सामो दोडे छे. तेम सिंह जेवा पुरुषो दुःखना निमित्त कारण उपर द्रष्टि नहीं देतां ए दुःख थवानुं मूख्य कारण कर्म छे. एम विचारी कर्म दूर करवाना उपायो शोधे छे. जो में माठां वा सारां कर्म कर्यां हशे. तो ते प्रमाणे मारे शुभाशुभ विपाक भोगववा पडशे. तेमां बीजो जीव मारु भूडुं करवा वा सारुं करवा समर्थ नथी. ए दुःख सर्व कर्मथी थाय छे, माटे सिंह पुरुषो कर्मनो नाश थाय तेम वर्ते छे. पण कोइ जीव उपर द्वेषभाव करता नथी.

मारा आत्माने जेम कर्म लाग्यां छे. ते-

म बीजा जीवोने पण कर्म लाग्यां छे. पण आत्मा तो सर्वना सरखा, अरुपी, अनंतज्ञान, दर्शन, चारित्रना भोक्ता छे. अेम.सर्व जीव गुणे करी एक सरखा छीए. सजातीय छीए. माटे सर्वे जीव मारा मित्र छे. एम भावना भावे ते मैत्री भावना कहीए. सर्व जीव उपर हितबुद्धि राखवी तेने मैत्री भावना कहे छे.

२ बीजी प्रमोद भावना कहे छे. गुणवंत अने ज्ञानादिक ऊपर राग तेने प्रमोद भावना कहे छे. धर्म करता जीवोने देखी खुशी थाय. ज्ञानवंत वैरागी मुनीओने देखी हर्ष धरे. तथा दश द्रष्टांते दोहीलो मनुष्य जन्म पामीने श्रावक कुल अवतार आदि हुं

धर्मनी जोगवाइ पाम्यो. तेथी मनमां हर्ष धरे. ते प्रमोद भावना.

३ धर्मवंत उपर राग अने मिथ्यात्वी उपर द्वेष पण नहीं तेने माध्यस्थ भावना कहे छे. हिंसक जीव उपर पण उत्तमजीवने करुणा उपजे. उपदेश देवा थकी जो सारा मारगे आवे तो तेने शुद्ध मार्गे आणवो. कदाचित् मार्ग न आवे तो पण द्वेष न करवो. केमके ते अजाण छे. एम जाणवुं ए माध्यस्थ भावना.

४ सर्व जीवने पोताने तुल्य जाणी दयापाले, कोइने हणे नहीं. तथा जे दुःखी होय. धर्महीन होय. तेना उपर करुणा लावे. अने तेनुं भलुं करवा चाहे. तथा धर्महीन

मनुष्य देखीने एम चिंतवे जे. ए जीव क्यारे धर्म पामशे. यथार्थ आत्म साधन प्राप्ति स्वरुप धर्मने क्यारे अवलंबशे. एवो जे परीणाम तेने चोथी कारुण्य भावना कहे छे.

बारभावना.

१ कुंटुंब, धन. पुत्र, परीवार सर्व विनाशी छे आ प्रत्यक्ष देखाय छे ते शरीर पण एक दीवस नाश पामशे. जीवनो मूलधर्म अविनाशी छे. जे जे नजरे देखवामां आवे छे ते सरवेनो नाश थसे. एम विचारवुं ते पहेली अनित्यभावना.

२ संसारमां जीवने मरण समये शरण राखवा कोइ समर्थ नथी. माता, पीता, भाइ, बेन, पुत्रादि जोतां आ शरीर मूकी जी-

व चाल्यो जाय छे, पण ते कोइनाथी रखा-तो नथी. राजा होय वा रंक होय. कीडो होय वा इंद्र होय. तोपण मृत्यु कोइने मूकतुं नथी. चारगतिना जीवोने मरण थकी रक्षण करी शरण राखवा कोइ समर्थ. नथी. एम विचारवुं ते बीजी अशरणभावना जाणवी.

३ कर्मना योगे आ आत्मा चारगतिरूप संसारमां अनादिकालनो जन्म मरण करे छे. अने असह्य दुःख भोगवे छे संसार बळ-ताअग्नि (दावानळ) समान छे. उत्तम पुरुषोए चारित्र ग्रहण करी संसारनो त्याग कर्यो छे. अरे हुं महा पापी संसारमां राच्यो माच्यो छुं. हुं हवे दुखःमय संसारथी क्यारे छुटीश. आ प्रमाणे विचारणा ते संसारभा-

वना जाणवी.

४ आ जीव एकलो आव्यो छे, अने अहींथी एकलो बीजी गतिमां जशे. पण धन धान्यादि परिग्रह, पुत्र, कलत्र, विगेरे मारी साथे आववानुं नथी. कुटुंबनुं पेट भरवा सारु. हिंसा, असत्य, चोरी—कूड कपटथी हुं लक्ष्मी पेदा करुं छुं. पण तेथी थएला पापमांथी. कोइ भाग लेनार नथी. ए मारे एकलाने भोगवबुं पडशे. सगांवहालां, वहालीस्त्री, पुत्र, दीकरीओने जन्मनी वखते साथे लाव्यो नहोतो. पूर्वभवना संबंधथी मारे तेमनो मेळाप थयो छे. पण अंते सर्व मूकी मारे एकलुं जवुं पडशे. जे जे प्रमाणे अहीं हुं धर्म वा अधर्म करुंछुं तेते प्रमाणे परभ-

वमां सुखःदुख पामीश. परने मारु मानी हुं मकलाऊछुं. पण हे जीव तारु कोइ नथी. संबंधे करी सर्व भेगुं थयुं छे. ते सर्वनो एक दीवस वियोग थशे. चोराशीलाख जीवायोनि भमतां दश द्रष्टांते दोहीलो मनुष्य जन्म पामी. हवे तुं प्रमाद करे छे. आखो दीवस घांचीनी घाणीना बळदनी पेठं. पाप काममां लागी रह्यो छे. पण जाणतो नथी के, मूढ अंते दुःख अनंतु भोगववुं पडशे. आ देखाता शरीरनी पण अंते खाख थइ जवानी छे. माटीमां माटीरुप थइ जशे. आ वखते जेवी धर्मनी सामग्री मळी छे, तेवी वारंवार मलनार नथी. माटे हे चेतन, चेत, चेत, माथे काळ झपाटा देत. तुं कयांथी आव्यो. कयां जा-

इश. तुं कोण छे. तारुं कोण छे. एनो विचार कर. राम, रावण, पांडव, कौरव, लक्ष्मण जेवा वीरपुरुषो एकीला गया. तो तुं केम मोहराजानी घेनमां उंघे छे. जाग जाग एकत्वपणुं धार. इत्यादि विचारणा ते एकत्व भावना जाणवी.

५ आ संसारमां कोइ कोइनुं नथी. सौ स्वार्थनुं सगुं छे. ज्यारे आपणाथी बीजानो स्वार्थ सरतो नथी. तो आपणा उपरथी हेत उतरी जाय छे. हे चेतन तारी नजरे जे जे पदार्थो देखाय छे ते ताराथी जुदा छे. अने तुं तेनाथी जुदो छे. माता, पीता भाइ, बेन, स्त्री. पुत्र, धन, ए सर्व हे जीव ताराथी जुदुं छे आ शरीर छे तेपण हे चेतन ताराथी

जुदुं छे. लेश्या, योग, पांच संस्थान, पांच शरीर, तथा पांच संघयण, दस प्राण पांच इंद्री, ए सर्व हे चेतन ताराथी जुदुं छे. तेनामां पोतापणुं मानीश नहीं एम विचारवुं ते अन्यत्व भावना जाणवी.

६ आ शरीर अपवित्र मळ मूळनी खाण छे. असुचिमय छे, पुरुषनां नव अने स्त्रीनां बार द्वारथी सदा अशुचि नीकळे छे, हाल आ शरीर पवित्र लागे छे. पण रोग थए छते दुर्गंधि युक्त थइ जशे. मांस रुधिर मेद हाडकांथी आ शरीर बन्युं छे, तेने देखी हे चेतन तुं शुं राचे छे. गर्भावासे तुं कीडानी पेठे नवमास मळमां रह्यो, सूर्यनो प्रकाश आवे नही, अने ऊंधे मस्तके रहेवुं, एहवां गर्भ-

नां दुःख चेतन शुं तुं वीसरी गयो ? माटे आ अशुचि मय काया देखी मोह पामी शुं राचे छे ? एम विचारवु ते छठी अशुचि भावना.

(७) चेतन मिथ्यात्व, इंद्रिय, कषाय, अने अव्रत थकी आश्रवनुं ग्रहण करे छे, शुभाशुभ कर्मनां दळीयां आववानो रस्तो आश्रव छे, शुभ दळीयांने पुण्य कहे छे. अने आत्मानी साथे लागेलां जे कर्मनां अशुभ दळीयां तेने पाप कहे छे, हिंसा, असत्य, चोरी मैथुन परिग्रह थकी आश्रवनो बंध थाय छे तथा राची माचीने पांच इंद्रियोना त्रवीश विषय शेववा थकी आश्रवनो बंध थाय छे. प्रमादना वश थकी तेम मन वचन

कायाना दुष्प्रणिधानथी तेमज क्रोधमान मा-
या, लोभ, तथा हास्य रति, अरति, शोक,
भय दुगंछा स्त्रीवेद, पुरुषवेद, नपुंशकवेद,
ए आदिथी आत्मानी साथे आश्रव लागेछे,
जीव अनादि काळथी आश्रवना ग्रहण कर-
वाथी चार गतिमां भम्या करे छे, अने तेथी
अनेक प्रकारनां दुःख पामे छे. ए आश्रव
महा दुःखदाइ छे. आत्मानो अहित कर्ता छे,
माटे तेनाथी हे चेतन तुं दुर रहे एम विचा-
रवुं ते आश्रवभावना. आश्रवनो संबंध अ-
भवि जीवने अनादि अनंत छे अने भविजी-
वने अनादि सांत छे.

८ आश्रवनो जेनाथी रोध थाय तेने
संवर कहे छे. हे जीव इर्यासमिति, भाषास-

मिति, एषणासमिति इत्यादि पांचसमिति. अने त्रणगुप्ति शुद्धि क्यारे पाळीश. अने बावीस परीसहने समभावे तुं क्यारे सहीश. हे चेतन तुं विषयाभिलाषथी मन पाछुं वाळ. क्षांत्यादि दशविध यतिधर्म शुद्ध पाळवा उद्यम कर के जेथी आत्महित थाय. ए यतिधर्म भवोभवनां दुःख टालणाहार छे. अने पंचमी गति जे मोक्ष तेमे आपनार छे. धन्य छे ते मुनिराजने केजे मान अपमान चित्तमां समगणे छे. सोनुं अने पाषाण चित्तमां समगणे छे. अने शत्रुमित्र उपर समद्रष्टि राखे छे. पांच प्रकारनां चारित्र हे जीव तने क्यारे उदये आवशे. अहो हुं क्यारे एकाकी अप्रतिबद्ध विहार करीश. हे चेतन कोइपण

जीव साथे वैर विरोध करीश नहीं. कारण के तेथी तुं भवोभव दुःख पामीश. कपट कर नहीं. विश्वास घाती थाइश नहीं. संसार-रुप समुद्रमां बुडाडनार नव प्रकारनो परिग्रह छे. तेनो त्याग कर. मूर्छा ममता राखवाथी पण जन्ममरण करवां पडे छे. तो साक्षात् नवविध परिग्रह केवां केवां दुःख पमाडशे. माटे तेनो त्याग कर. विषयने विष. (झेर): सरीखा जाण. एकेक इंद्रिय विषयथी. भमरो, पतंग, मृगमीन दुःख पामे छे. तो जे पांचे इंद्रियोने वश थइ गया छे. तेनी शी गति थशे. अरे हुं अनादि काळथी संसारमां ऊचनीच कुळमां ऊत्पन्न थाउछुं. पुण्यना योगे उचकुळमां अवतरी नीचकुळमां

उत्पन्न थएलानी निंदा करी पाछो नीचकुळमां उत्पन्न थयो. एम हे चेतन तुं अनंतिवार उचपणुं तथा नीचपणुं पाम्यो. बटाटा. शकरीयां, गाजरीयां, मुळा, आदु, लसणमां तुं अनंतिवार उत्पन्न थयो. तो ते वखते तारु उचपणुं क्यां गयुं हतुं. एवी रीते आठमद हे जीव तुं करीश नहीं, ए आठमद आत्माना गुणोनो नाश करनार छे. स्थुलीभद्र मरीची. सनत्कुमार, आदि एकेक मद करवाथी कटुक विपाकने पाम्या छे. माटे ए आठमदनो त्यागकर. कर्मवस्तु थकी तुं जुदो छे. तुं अनंत रत्नत्रयीनो भोक्ता छे. तुं अरूपी छे. अज छे. अविनाशी छे. अकषायी छे. अरोगी छे अमायीयी छे. अवेदी छे. अ-

छेदी छे. इत्यादि संवरभावना जाणवी.

९ जेनाथी कर्म निर्जरे (दूर थाय) तेने निर्जरा कहे छे. हे चेतन तुं निर्जरभावना हृदयने विषे धारण कर. अने व्रत पच्चखाणनो आदर कर. ज्ञानसहित क्रिया करवी ते निर्जरानुं कारण छे. बारभेद तपश्चर्या करवाथी निर्जरा थाय छे. निकाचित कर्मपण तप थकी दूर थाय छे. सुकोशल मुनि. ढंढणकुमार गजसुकुमाल जेवा मुनीश्वरोने धन्य छे के जेणे उग्रतपश्चर्या करी छे. हुं पण ज्यारे तेवी रीते तपश्चर्या करीश. त्यारे धन्य दीवस मानीश. इत्यादि विचारणा ते निर्जरा भावना जाणवी.

१० चऊदराज लोकनुं स्वरुप विचारवुं

ते लोक स्वरुप भावना जाणवी. एनुं स्वरुप पूर्वे लखवामां आव्युं छे तेथी अहीं नथी लख्युं.

११ संसारमां भमतां जीवने समकितनी प्राप्ति थवी दुर्लभ छे. समकित पाम्या छतां पण चारित्र ग्रहण करवुं दुर्लभ छे. इत्यादि विचारणा ते बोधि दुर्लभ भावना जाणवी.

१२ धर्मना कथन करनार सद्गुरु तथा जीनेश्वर भगवाननी स्याद्वादमय वाणी सांभळवी तेनी जोगवाइ दुर्लभ छे. ते बारमी धर्मदुर्लभ भावना जाणवा.

ए बार भावनानो विस्तार ग्रंथ गौरवना भयथी कर्यो नथी. विशेष अधिकार बीजा

ग्रंथो थकी जाणवो. मनुष्य जन्म पामी आलस, विषय, कषाय, परभावमां जो आयुष्य गाळीशतो हे चेतन दुर्गतिमां जाइश. आत्मस्वरुप ओळखवुं घणु दुर्लभ छे. चिंतामणि रत्न पामवुं ते सहेल छे पण आत्मज्ञान स्याद्वाद रीते थवुं मुश्केल छे. मारो आत्मा शाश्वतो छे, पण कर्मना प्रपंचथी चतुर्गतिरुप संसारमां भटके छे. हे चेतन तुं ज्ञान, दर्शन, चारीत्ररुप रत्नत्रयोकरी सहीत छे. धन कुटुंब, इंद्रिय, शरीर, लेश्या, योग, ए सर्व परवस्तु छे. एमां तारु कंइ नथी. आ जीव धन पुत्र स्त्रीना मोहमां फसाइ तेने पोतानु मानतो अनंत दुःखनी परंपरा पामे छे. संयोगी वस्तु धन कुटुंब ए सर्व तारा थकी अ-

त्यंत जुदी छे. हुं चेतन छुं, ए पुद्गल अचेतन जड छे. तेनी संगतीए हुं पण जड स्वरुप थयो छु हुं अमूर्त छुं. पुद्गल मूर्ति छे. हुं शुद्धि निर्मल छुं. बुद्ध छुं, ज्ञानानंदी छुं. हुं विकल्प संकल्प थकी रहीत छुं. माहरु स्वरुप अलक्ष्य छे. हुं कर्म रोग थकी रहीत अरोगी छुं. हुं छलेश्याथी रहीत अलेशी छं. हुं चार प्रकारना आहार थकी रहीत अणाहारी छुं. हुं अव्याबाध सुखनो भोगीछुं. हुं अगुरु लघु छुं. आ सर्व प्रपंच कर्म थकी छे. एम आत्म स्वरुप भावना भावे. अने स्वगुण रमणता जेम जेम संसार थकी ऊदाशीन पणु थाय छे, तेम तेम संवेगरंगे करी रंगीत आत्मा थाय छे, आ काळमां भव्य प्राणी-

ओने ज्ञाननो आधार छे. ज्ञाने करीने आत्मानुं स्वरुप यथातथ्य जणाय छे, माटे ज्ञाननो घणो अभ्यास करवो एज हितकारी छे.

समकित सहीत ज्ञान दर्शन चारित्र ते मोक्षनु कारण छे, अने तेवु ज्ञान सहीत चारित्र न ग्रहण थइ शके. तोपण श्रेणीक राजानी पेरे सद्दहणा शुद्ध राखवी. जो समकित शुद्ध छे तो मोक्ष आसन्न छे कहुं छे के दंसण भठ्ठाभठ्ठो दंसण भठ्ठोइन च्छि निव्वाणं सिज्झंति चरण रहिया दंसण रहिया न सिज्झंति ॥ १ ॥ वळी आगममां कहुं छे के जंसक्के तीकरइ अहवा नसक्केई तहय सद्दहइ सद्दहमाणो जीवो पावइ अयरा मरंठाणं ॥

अर्थ—रे जीव तु करी शके तो कर अने जो न करी शके तोपण जेवो वीतराग भगवंते धर्म स्याद्वादरुप उपदेश्यो छे. ते पमाणे हृदयमां सद्दहणा शुद्ध राखनार प्राणी अनुक्रमे मोक्ष स्थनक पामशे. जीवा जीवा पुण्यं पावा सवसंवरा य निज्झरणा वंधो मुख्खोयत हा नव तत्ता हुंति नायव्वा—जीव, अजीव, पुण्य, पाप, आश्रव, संवर, निर्जरा, बंध, अने मोक्ष, ए नवतत्त्व छे.

हेया बंधा सव पुण पावा, जीवाजीवाय हुंति विन्नेया संवर निज्झर मुखो तिन्नि विए उवादेया ॥ १ ॥ बंध आश्रव पुण्य अने पाप ए चार तत्व त्याग करवा योग्य छे जीव अने अजीव तत्व जाणवा योग्य छे,

संवर निर्जरा अने मोक्ष ए त्रण तत्व आदरवा योग्य छे.

जीवो.संवर निज्जर मुखो चत्तारि हुंति अरुवी रुवी बंधा सव पुण पावा मिस्स हुंतिअजीवो—जीव संवर निर्जरा अने मोक्ष ए चार तत्व अरुपी छे, बंध आश्रव पुण्य अने पाप ए चार तत्वरुपी छे, अने अजीव तत्वरुपी पण छे, अने अरुपी पण छे. धर्म अधर्म आकाश अने काळ ए चार द्रव्य अजीव भूत अरुपी छे अने पुद्गल द्रव्य अजीव स्वरुप रुपी छे.

ए छ द्रव्यना अगीआर ११ सामान्य स्वभाव कहे छे.

१ अस्तिस्वभाव २ नास्तिस्वभाव ३

नित्यस्वभाव ४ अनित्यस्वभाव ५ एकस्वभाव ६ अनेकस्वभाव ७ भेद स्वभाव ८ अभेदस्वभाव ९ भव्यस्वभाव १० अभव्य स्वभाव ११ परमस्वभाव ए अगीआर सामान्य स्वभाव छे.

छ द्रव्यना दस विशेष स्वभाव कहे छे.

१ चेतन २ अचेतन ३ मूर्ति ४ अमूर्ति ५ एक प्रदेश ६ अनेक प्रदेश ७ शुद्ध ८ अशुद्ध ९ विभाग १० ऊपचारित स्वभाव ए दस विशेष स्वभाव छे ते श्री केवळी भगवान केवळज्ञानथी जाणे, अने देखे ए दश विशेष स्वभाव ते कोइक द्रव्यमां छे, अने कोइ द्रव्यमां नथी. ए सर्व स्वभाव सिद्ध भगवान ज्ञानेकरी जाणी रह्या छे. एवा अनंत

गुणी सिद्ध भगवान समान पोताना आत्माने जाणी ऊपादेय करी ध्यावे, तेज समकित जाणवुं.

चउराज लोकनो खंध लोकाकाश सादिसांत छे. ते आवी रीते जे—लोकना मध्य भागे आठ रुचक प्रदेशथी मांडीने सादि छे. अने चऊराज लोकानो अंत आवे तीहां सांत. तथा चउराज लोकनौ छेल्लो प्रदेश मुकीने पछे आ लोकनी आदि लेवी. पण अलोकने अंते नथी. माटे सादि अनंत कहुं छे.

छ द्रव्यना यथार्थ ज्ञानपूर्वक हेय पांच द्रव्य त्याग करे. अने जीव द्रव्य आदरवानो परिणाम तेने समकित ज्ञान कहीए. ते सम-

कित ज्ञानथी भलुंज थाय छे. कह्युं छे के—नायम्मि गिन्हियव्वयव्वे अगिह्वि यव्वेअ इच्छअच्छमि जइव्वमेवइजो सोउपएसो नओनाम. भावार्थ—ज्ञानथी छ द्रव्य जाणीने आदरवा योग्य होय ते आदरे- अने त्यागवा योग्य त्याग करे. एणो जे ते नय उपदेश जाणवो.

हवे समकितनी दशरुचि कहे छे.

१ निसर्गरुचि—ते निश्चय नये करी जीवादि नवतत्व जाणे. आश्रव त्यागे. संवर सेवे. वीतरागना कहेला छ द्रव्य ते द्रव्य, क्षेत्र, काळ, भावथी जाणे. नामादि चार निक्षेपा जीनाज्ञा पूर्वक पोतानी बुद्धिथी जाणे. सद्दहे. वीतरागे कहेला भाव सत्य छे. एम जाणवुं ते.

२. उपदेशरुचि—नवतत्व तथा छ द्रव्यने गुरु उपदेशथी जाणीने सद्दहे ते.

३ आज्ञ रुचि—वीतराग भगवंते कहेः ली आज्ञानुं मान्यपणुं तेने आज्ञा रुचि कहे छे.

४ सूत्ररुचि—वर्तमानक विद्यमान. पीस्तालीश आगमादि, मूलसूत्र, तथा निर्युक्ति, भाष्य, चूर्णि, टीका. ए पंचांगीनां वचन माने ते जीव सूत्ररुचिवंत कहेवाय छे. आगम भणवानी तथा सांभळवानी घणी चाहना होय ते सूत्ररुचि जाणवी.

५ गुरु मुखथी एकपदनो अर्थ सांभळीने अनेक पद सद्दहे. ते बीजरुचि.

६ सूत्र—सिद्धांत अर्थ सहीत जाणे.

अने अर्थ विचार सांभळवानी घणी चाहना होय ते अभिगमरुचि.

७ षट् द्रव्यना गुणपर्यायने चार प्रमाण तथा सात नये करी जाणे ते विस्तार-रुचि.

८ ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप, विनय, वैयावस्य, समिति. गुप्ति. चरण सित्तरी अने करण सित्तरी सहीत. आत्म धर्म साधे जेने घणी रुचि होय. ते क्रिया रुचि.

९ अर्थज्ञान थोडुं कहे छते घणुं जाणीने कुमतिमां पडे नहीं. ते संक्षेपरुचि.

१० पांच अस्तिकायनुं स्वरुप जाणे. श्रुत-ज्ञाननो स्वभाव अंतरंग सत्ता सद्दहे. ते ध-र्मरुचि समकितना सडशठ बोल जाणी. आ-

दरे. ते जीव समकिती कहेवाय छे. हे भव्य प्राणीयो पूर्व पुण्ययोगे करी मनुष्य जन्म पाम्या छो. माटे शुद्धदेव, शुद्धगुरु, अने शुद्धधर्म ओळखी आदर करो सामायक पुजा, प्रभावना, पडिक्कमण, पोसह, श्रावकनां बारव्रत साधुनां पंचमहाव्रत, तीर्थयात्रा, सद्गुरुवाणी, जीर्णोद्धार शुद्धक्रियानो खप इत्यादि धर्मकरणी हृदयमां धारण करो. के जेथी अनुक्रमे शीवसुख पामो.

आ षड्द्रव्य विचार नामनो ग्रंथ आगमसार. नयचक्र आदि ग्रंथोनी सहायताथी ते ग्रंथोना अनुसारे भव्यजीवोना उपगार भणी बनाव्यो छे. तेमां कंइ वीतरागनी आज्ञा विरुद्ध भाषण थयुं होय. लख्युं होय.

ते त्रिविधे करी मिरछामि दुक्कड दऊछुं. आ ग्रंथमां कोइ कंइ दोष, विभ्रम चित्तथी थयो होय तो ते सुधारवा पंडीत पुरुषोए कृपा करवी. शुभे यथाशक्ति यतनीयं. ए न्यायने अनुसरी में उद्यम कर्यो छे. तेथी हुं मारी महेनत परोपकार थये छते. सफल मानीश. आ ग्रंथ पंडीत पुरुषोने योग्य छे. आ ग्रंथ वांची व्यवहार मार्गमां स्नेह धरी हृदयमां निश्चय दृष्टि राखशे ते आत्मसुख पामशे.

दुहा

अध्यातमरसझीलवा, ए षट् द्रव्य विचार;
जे भवी प्राणी धारशे, ते लहेशे सुखसार. १
जन्म मरण करी आतमा, रळ्यो काळ अनंत;

जीनवाणी षड् द्रव्यनी, सुणतां होवे संत. २
सात नये करी आतमा, सप्तभंगी ए धार;
आत्म स्वरूप विचारशे, ते लहेशे भवपार. ३
ओगणीश अट्ठावननी, विक्रम साल रसाल;
फागुण मासनी पंचमी, रुडो शुकरवार. ४
पादरा नगरे शोभता, शांतिनाथ भगवंत;
तेह तणा चरणे नमी, ग्रंथ कीयो गुणवंत. ५
विनयवंत विवेकवंत, श्रावक मोहनभाइ;
हीमचंद तणा सुत कारणे, ग्रंथ कीयो सुखदाइ ६
तपगच्छ गयण दिवा करुं, हीराविजय सूरिराय;
सहेजसागर तासाशिष्य, पदवी उपाध्याय. ७
पाट परंपर तेहनी, रविसागर गुरुराय;
सुखसागर शिष्य तेहना, विनयवंत कहाय. ८
तास चरणने सेवतो, बुद्धि कहेछे एम;

भणेगणे जे धारसे, ऋद्धि सिद्धि लहे क्षेम. ९
ज्यां लगे शशी सुरज रहे, जगमां करे प्रकाश;
भवीजन:मनमां भानुसम, थइने करजो वास. १०
ए षड् द्रव्य विचार ग्रंथ, जीनवाणीथी रसाल;
भणशे गणशे ते भवी, लहेशे मंगलमाल ॥११॥

संपुणम्

श्रीः

शांतिः शांतिः शांतिः

शांतिः शांतिः

शांतिः